

साझा। हम समाते हैं। –ज.

अगर यह तुम्हें मिले, तो इसे तह करके लौटाना।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उस चीज़ पर लगती है जो सिर्फ़ कहानी में होती है: असली ड्रैगन नहीं होते और पार्सल उड़कर वापस नहीं आते। असली दुलाई के लिए आख़िरी पन्ना देखो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 6

एक जगह, हम तीन

LinguAula

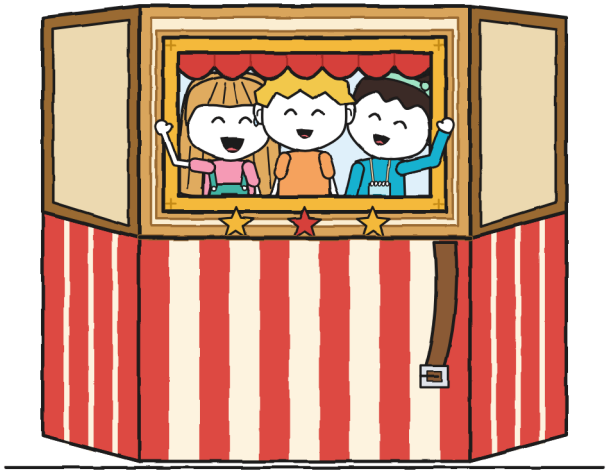

(गुनी की डायरी)

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी · 6
एक जगह, हम तीन

सीरीज़ की छठी किताब। पिछली किताबें: “यह पार्सल काटता है”, “बादल गरजने से पहले न खोलें”, “वापस आया, प्लीज़”, “यहाँ नहीं, चूरा!” और “एक केक, हम दो”।

लेखन और चित्र: LinguAula

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।



हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*

यह तीन लोग उठाते हैं। मैंने हत्था चुन लिया। –ज.

कौन कौन है

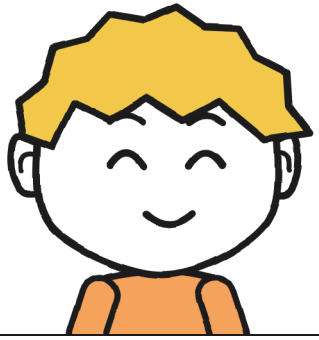

गुनी। सेंटीमीटर में नापता है। इस हफ़्ते एक और चीज़ भी गिनता है।

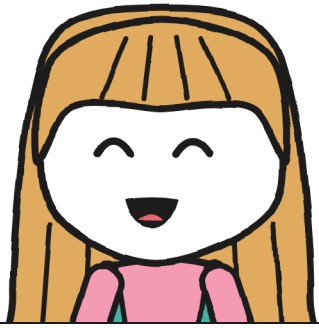

जूलिता। उसे रास्ता पता है। उसे समझाना दूसरी बात है।



नोआ। जूलिता की पुरानी दोस्त। क़दमों से नापती हैं: क़दम हमेशा उसके साथ रहते हैं।

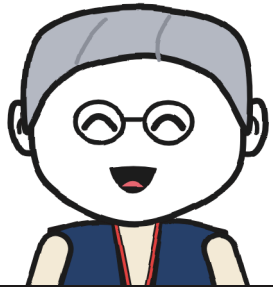

आइरीन। थिएटर वर्कशॉप चलाती हैं। रास्ता नहीं बतातीं: "रुको" कहती हैं।

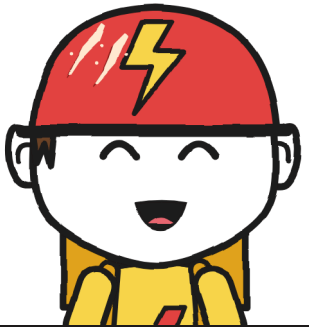

टोन्यो। "बिजली" का और दुकान का। समय नापता है, राय नहीं देता। लगभग।



माशा। पार्सल उधार देती हैं। डिब्बा नहीं छोड़तीं।

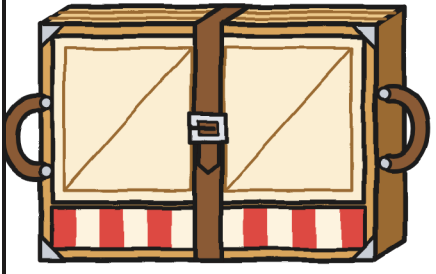

नं. 6। एक थिएटर जो एक डिब्बे में समा जाता है। पट्टा कोई न पकड़े, तो जहाँ मन करे वहाँ खुल जाता है।

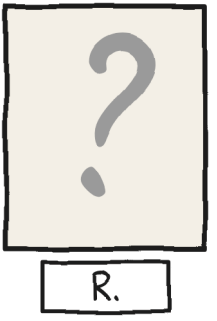

R. प्रेषक। इस बार इन्वेंटरी में एक लाइन छूट गई है।

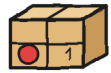

अध्याय 1

तीन लोग क्यों चाहिए?

डायरी नंबर 5 दो सुइयों पर ख़त्म हुई थी, जो एक घड़ी में थीं, और मैंने उसे वैसे ही बंद कर दिया, किसी से सुई हटाने को कहे बिना। ख़त्म हुई डायरी वैसी ही रहती है जैसी आप छोड़ें। यही उनकी अच्छी बात है: अब उनसे कोई बहस नहीं कर सकता।

नंबर 6 नारंगी है। मंदारिन वाला नारंगी, जो अगर जल्दी न हो तो एक ही बार में छिल जाता है, और एक कोने में दुकान की मुहर भी है। मारा उसे काउंटर पर गुलाबी वाली के बग़ल में रखकर पीछे के कमरे में चली गईं, उन डिब्बों को सजाने जो पहले से सजे हुए थे। मारा डायरियाँ हाथ में नहीं देतीं: वे उन्हें वहाँ रख देती हैं जहाँ आपकी नज़र जाएगी।

पहले पन्ने की मेरी एक परंपरा है। नंबर 2 पर मैंने लिखा था ऑफ़िशियल; नंबर 3 पर, सीक्रेट; नंबर 4 पर, फ़ाइनल; नंबर 5 पर, शांत। चार शब्द, चारों ताले वाले, और चारों जूलिता ने सबसे पहले पढ़े, मुझसे भी पहले। इस बार मैंने ऐसा शब्द ढूँढा जो पहले से इस बात का हिसाब रखता हो।

ऊपर मैंने लिखा डिलीवरी डायरी 6 · गुनी की, जो कि लिखने का क़ायदा है। उसके नीचे, बस एक शब्द:

साझा।

और मैंने आधा पन्ना ख़ाली छोड़ दिया, कि कहीं ज़रूरत पड़ जाए। किस बात की ज़रूरत, यह मुझे नहीं पता था। जल्दी ही पता चल गया: वह एक मिनट भी ख़ाली नहीं रहा।

जूलिता काउंटर के उस पार थी। उसने मुझसे डायरी माँगी नहीं; उसने एक उँगली से उसे खींच लिया, हरा मार्कर खोला और आधे पन्ने पर इतने बड़े अक्षरों में लिखा कि वे हाशिये तक पहुँच गए, फिर सोचा और हाशिये में भी आगे बढ़ गई। फिर उसने मार्कर बंद किया, चेहरे पर «मैंने नहीं किया» वाला भाव लिए, जो उस दुकान में अब सबका चेहरा है।

मैंने पहला पन्ना अपनी लिखावट से साझा कर लिया। —ज.

मैंने नापा कि उसने कितनी जगह ली: नीचे का पूरा आधा। मेरा शब्द, अपने चारों ओर छोड़ी हुई सारी हवा के साथ, ऊपर वाले आधे में था। दो आधे। मुझे यह बँटवारा बड़ा वाजिब लगा।



हमेशा की तरह, उनके लिए जो इस डायरी तक बाक़ी डायरियों से गुज़रे बिना पहुँचे हों। दुकान का नाम नामुमकिन डिलीवरी है और वह मारा की है, जो जादूगरनी हैं, बैंगनी टोपी पहनती हैं और जिनकी मुहर, लगते ही, बुझी मोमबत्ती की गंध वाली चिंगारियाँ छोड़ती है। बाईं तरफ़ की शेल्फ़ पर वे लौटाए हुए पार्सल रखती हैं: ऐसे पार्सल जिन्हें कोई पहुँचा नहीं पाया, सब R. के भेजे हुए। अगर पाने वाला किसी पार्सल के लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त न करे, तो भोर होते ही पार्सल उड़कर अपनी शेल्फ़ पर लौट आता है। वे बीस थे। जूलिता और मैं पाँच पहुँचा चुके हैं: एक ड्रैगन का अंडा, पैरों वाले बीज, एक घंटी, एक पहुँचने वाला दल और एलिया की बेकरी के लिए एक स्टैंड। दीवार पर, हरे अक्षरों में, लिखा है बाक़ी 15। रायो वाला टोन्यो अपनी जगह पर है, उलटे डिब्बे में, स्टूलों के पास। फ़िलहाल।

सोमवार को, एलिया के नोट के अगले दिन, मैं स्कूल से निकला और सीधा दुकान गया। जूलिता काउंटर पर हाथ में एक लिफ़ाफ़ा लिए मेरा इंतज़ार कर रही थी। वह न हरा था, न नीला, जो लिफ़ाफ़ों के वे रंग हैं जिन्हें मैं जानता हूँ। वह फ़िरोज़ी था और बंद था। उसने उसे दो उँगलियों से, एक कोने से पकड़ रखा था, जैसे वह जलता हो।

“डाकिया लाया है। लिखा है ‘नामुमकिन डिलीवरी की दुकान’। मैंने काफ़ी देर से नहीं खोला।”

“कितनी देर से?”

“अट्ठाईस मिनट,” टोन्यो ने अपने डिब्बे से घड़ी देखते हुए कहा। “मोहल्ले का रिकॉर्ड।”

उसने दुकान के अंदर भी हेलमेट पहन रखा था, जिस पर पंजे की दो छोटी लकीरें थीं, और घड़ी आस्तीन के ऊपर बाँध रखी थी, ताकि आस्तीन चढ़ाने में वक़्त ज़ाया न हो।

मैं जूलिता को जानता हूँ। उसके हाथ में बंद लिफ़ाफ़ा उतनी ही देर टिकता है जितनी देर उसे उसका फ़्लैप ढूँढने में लगती है। अट्ठाईस मिनट सब्र नहीं था। वह कुछ और था, और मुझे नहीं पता कि क्या।

यह मेरा नहीं था। जो लिफ़ाफ़े मेरे नहीं होते, वे तिगुने भारी लगते हैं। —ज.

मारा ने उसे नाख़ून से खोला, ज़रूरत से ज़्यादा काग़ज़ फाड़े बिना। चिट्ठी साफ़ लिखावट में थी, किसी बड़े की लिखावट, उन लोगों जैसी जिनकी पंक्ति आख़िर में टेढ़ी नहीं होती:

“मैं आइरीन हूँ, मोहल्ला केंद्र के थिएटर वर्कशॉप की प्रभारी। इन्वेंटरी अपडेट करते समय मुझे एक पंक्ति मिली: ‘तह होने वाला छोटा थिएटर: पाना बाक़ी’। क्या वह आपके पास है? शनिवार 31 को मोहल्ले की प्रतियोगिता है। अगर

छोटा थिएटर तह करके तीन लोगों की टीम के साथ हमारे आँगन में पहुँचे, तो मैं वहीं दस्तख़त कर दूँगी। नोआ की टीम में तीन की जगह है और अभी सिर्फ़ वही है।"

उसके नीचे, किसी और लिखावट में, छोटी और सीधी, फ़िरोज़ी रंग में:

"जूलिता: मैं ही हूँ! अब मैं थिएटर करती हूँ। किसी ऐसे को ले आओ जो पार्सलों के बारे में जानता हो। —नोआ।"

जूलिता ने दस्तख़त पढ़े और उसका होंठ एक तरफ़ से ऊपर उठ गया, बस एक तरफ़ से, जैसे तब जब उसे कुछ याद आता है जो वह बताने वाली नहीं होती। उसने "नोआ" धीरे से कहा, ऐसे जैसे किसी गली का नाम लिया जाता है जिससे आप हज़ार बार गुज़रे हों।

"पार्सलों के बारे में जानने वाला।" वह मैं था। "पार्सल" मुझे अच्छा लगा। "कोई" कम।



पाँच बजे दोनों आईं।

आइरीन के पास एक फ़ाइल थी, जेबों से भरा गहरा नीला जैकेट और गले में लटकी एक सीटी। उनके बाल छोटे और सलेटी थे और गोल चश्मा, जिससे उन्होंने दुकान को शेल्फ़-दर-शेल्फ़ देखा, उस इंसान की तरह जो बिना कहे इन्वेंटरी कर रहा हो। नोआ के गले में रस्सी से एक छोटी कॉपी लटकी थी और कान के पीछे एक फ़िरोज़ी पेंसिल। बाल, घुँघराले, ऊँचे जूड़े में, पुदीने जैसे हरे स्कार्फ़ से बँधे; स्वेटर फ़िरोज़ी, लिफ़ाफ़े जैसा। उसमें सब कुछ इस तरह रखा लगता था कि कुछ ढूँढना ही न पड़े।

जूलिता काउंटर के पीछे से, फाटक खोले बिना, नीचे से निकली और दोनों गले लगीं। इतनी देर गले लगीं कि मुझे नापने का वक़्त मिल गया: ग्यारह

सेकंड। मैं एक तरफ़ खड़ा रहा, डायरी के साथ। डायरी इस काम के भी आती है: हाथ में कुछ रखने के।

“यह गुनी है,” जूलिता ने कहा। “पार्सलों के बारे में जानता है।”

“नमस्ते, पार्सलों के बारे में जानने वाले गुनी,” नोआ ने कहा। और उसने मेरा नाम अपनी कॉपी में लिख लिया।

पूरा लिखा, उस नए नाम के साथ जो उसने अभी मुझे दिया था। जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से मैंने देखा कि मैं पन्ने की दूसरी पंक्ति में था। पहली पंक्ति में “जूलिता” था, और उसके नीचे एक लकीर, उन चीज़ों की तरह जो हो चुकी हों।



मारा नीले स्टूल पर चढ़ीं और अपनी शेल्फ़ से नं. 6 उतारा। बाक़ी सबके जैसा एक डिब्बा, न बड़ा, न छोटा। लेबल पर टाइप की हुई पाँच पंक्तियाँ थीं: नं. 6। आँगन का वर्कशॉप। दोनों दरवाज़ों से प्रवेश। तह करके पहुँचाएँ। और नीचे, हमेशा की तरह, प्रेषक: R.। चारों तरफ़ वापस किया गया की नौ मुहरें।

“नौ मुहरें,” जूलिता ने कहा।

“‘दोनों दरवाज़े’,” नोआ ने पढ़ा। “कौन से दो दरवाज़े?”

आइरीन को नहीं पता था। मारा को भी नहीं। मैंने उसे प्रश्नचिह्न के साथ लिख लिया, जो मैं तब लिखता हूँ जब मुझे कुछ नहीं पता और चाहता हूँ कि दर्ज रहे कि मैंने ग़ौर किया।

“मैं उसे नौ बार ले गई,” मारा ने कहा। “सोमवार को सिलाई वाले दरवाज़ा खोलते थे। बुधवार को कोरस। शुक्रवार को शतरंज। ‘वर्कशॉप? यहाँ नहीं।’ वर्कशॉप के लिए कोई दस्तख़त नहीं करता था।”

वे बोल रही थीं और मैंने उसे तीन चौखानों में बनाया: मारा, डिब्बा बग़ल में दबाए, उसी दरवाज़े के सामने, और दरवाज़े पर, बारी-बारी से, धागे वाली सुई, एक सुर का निशान और शतरंज का घोड़ा, जो कुछ नहीं बोल रहा था क्योंकि शतरंज में चुप रहा जाता है। नीचे, भोर में दुकान की खिड़की से अंदर आता डिब्बा। नौ बार।

“थिएटर आँगन में रिहर्सल करता है,” आइरीन ने कहा। “और आँगन में घंटी नहीं है।”

उन्होंने फ़ाइल खोली और मारा को केंद्र की मुहर वाला एक पन्ना दिखाया। मारा ने उसे नाक बहुत पास रखकर पढ़ा, जो उनके पढ़ने का वह तरीक़ा है जब वे किसी बात को गंभीरता से लेने वाली हों।

“अब यह रजिस्टर में है: ‘थिएटर वर्कशॉप। प्रभारी: आइरीन’। एक वर्कशॉप के लिए अब कोई दस्तख़त करता है।”

“अब जब दस्तख़त करने वाला कोई है, तो मारा इसे अपने डिब्बे में क्यों नहीं ले जातीं?” जूलिता ने पूछा।

“मैं इसे अपने डिब्बे में नौ बार ले जा चुकी हूँ,” मारा ने कहा। “अब शर्तें वह रखेगा जो इसे लेगा।”

“तह होने वाला छोटा थिएटर चौक-चौराहों पर ले जाने के लिए है,” आइरीन ने कहा। “मेरे बच्चे इसे सड़क पर उठा सकें। न उठा सकें, तो यह मेरे काम का नहीं। और जो मेरे काम का नहीं, उस पर मैं दस्तख़त नहीं करती।”

“यह मैंने एक बेकरी में सुना था,” मारा ने कहा।

मेरे पास चिट्ठी पढ़ते ही से एक सवाल था, और मैंने उसे पूछ लिया, उससे पहले कि वह घिस जाए।

“और तीन लोग क्यों चाहिए?”

मैंने सच में पूछा था। एक गठरी, दो हत्थे; दो लोग, हर हत्थे पर एक। मैंने उँगलियों पर गिना था और दो आए थे।

कोई नहीं हँसा। आइरीन ने चश्मे के ऊपर से मुझे देखा, जैसे कोई ऐसे पुरज़े को देखता है जो जितना लगता था उससे बेहतर बैठता है।

“अच्छा सवाल है। मंगलवार को आँगन में, इसका जवाब तुम लोग मुझे दोगे।”

मारा ने अपनी किताब खोली और शर्तें लिखीं। मारा की शर्तें हमेशा एक हाथ में समा जाती हैं; मैंने अपने हाथ से गिनीं और अँगूठा बच गया:

- नं. 6: रिहर्सल के लिए उधार।
- आइरीन के साथ निकलेगा या मेरे साथ।
- तह होकर लौटेगा।
- यहीं सोएगा।

लेबल डिब्बे में रहेगा, और डिब्बा मारा के पास।

अगर यह शेल्फ़ पर सोता है, तो भोर में इसके पास लौटने की कोई जगह नहीं। यह अब भी नौ मुहरों पर है। मैंने पूछा था। –ज.



मंगलवार को हम मोहल्ला केंद्र के आँगन में गए। फुटपाथ से वहाँ लोहे के फाटक से अंदर जाते हैं, जिस पर रंग की बहुत सारी परतें थीं, और जो अपने आप बंद होता है: आप उसे छोड़ते हैं और वह धीरे-धीरे लौटता है, क्लिक की आवाज़ तक, उस कुत्ते की तरह जो बिना कहे बैठ जाता है।

मारा ने डिब्बा ज़मीन पर रखा और ढक्कन खोला। बाहर आते ही छोटा थिएटर बढ़ गया, जैसे एलिया का स्टैंड बढ़ा था। मैं अब डरता नहीं: मैं टेप निकाल लेता हूँ।

बंद होने पर वह लकड़ी के पैनलों और कपड़े की एक चपटी गठरी था, हर तरफ़ एक हत्था और एक पट्टा, जो तीन छेदों वाले बकल से गुज़रता था। एक मीटर गुणा सत्तर सेंटीमीटर, और मोटाई में एक बित्ता। फाटक का एक पल्ला खुला हो तो नब्बे सेंटीमीटर। मोटाई की तरफ़ से वह फाटक से निकल जाता था। यह आसान हिस्सा था।

सबसे पहले आइरीन देखना चाहती थीं कि वह पूरा है या नहीं। उन्होंने पट्टा खोला और गठरी घुमाई। पैनल अपने आप खुल गए, अपने वज़न से, एक के बाद एक: क्लैक, क्लैक, क्लैक। तीन दीवारों वाला एक मंच, एक छोटा परदा और पिछले पैनल में चौखटे वाली एक खिड़की।

खिड़की से टोन्यो दिख रहा था, जो फुटपाथ से एक सैंडविच लिए गुज़र रहा था। उसका मुँह भरा था। वह नमस्ते नहीं कर सका। वह एक पल को रुक गया, चौखटे में, हेलमेट पहने हुए और एक गाल दूसरे से ज़्यादा फूला हुआ, जैसे दोपहर के खाने के वक़्त बनी किसी बड़े आदमी की तस्वीर।

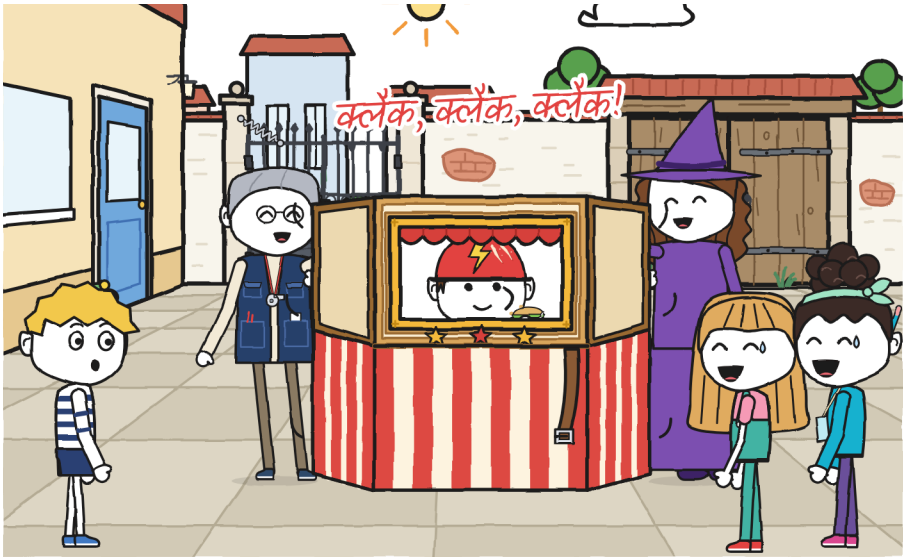

“पूरा है,” आइरीन ने कहा। “वर्कशॉप का नियम: हाथ हत्थों पर। हिंज पर कभी नहीं। और मोड़ों पर कोई पट्टा पकड़ता है।”

मैंने उसे ज्यों का त्यों लिख लिया।

आइरीन और मारा ने उसे तह किया और पट्टा कस दिया।

“हम आज़माएँगी,” जूलिता ने कहा। नोआ तब तक दूसरे हत्थे पर थी।

उन्होंने तय करने के लिए एक-दूसरे को देखा नहीं। एक-दूसरे से कहा भी नहीं: हर कोई अपनी तरफ़ चली गई, जैसे हर रोज़ की कुर्सी की तरफ़ जाया जाता है।

उन्होंने तीन तक गिना और उठा लिया। उठ गया। उन्होंने आँगन का एक चक्कर लगाया, धीरे-धीरे, कोहनियाँ थोड़ी खुली, और छोटा थिएटर उन दोनों के बीच बिना हिले चलता रहा, किसी सलीक़े से उठाई ट्रे की तरह। वे फाटक तक पहुँचीं। फाटक बंद था।

जूलिता ने उसे देखा। नोआ ने उसे देखा। उनके चार हाथ थे और चारों भरे हुए थे।

मैं दो मीटर दूर खड़ा था, मेरे दोनों हाथ ख़ाली थे और एक डायरी थी।

आइरीन, पीछे, फ़ाइल को सीने से लगाए, कुछ नहीं बोलीं। न "इनकी मदद करो", न "तुम"।

मैंने फाटक को पीठ से रोक लिया। वे निकल गईं। आइरीन ने फ़ाइल में कुछ लिखा।



उस शाम मैंने इस डायरी का यंत्र बनाया। यह मेरे करियर का पाँचवाँ है, काँपमापी, लालमापी, यहाँमापी और शोरमापी के बाद, और पहला जो एक इंसान को नहीं, एक साथ कई को नापता है। मैंने उसका नाम रखा तीन का मीटर, «किस हिस्से में कौन क्या करता है»। हर हिस्से के लिए एक पंक्ति और तीन खाने, हर खाने में एक छोटा चित्र:

- उठाना: दो हाथ, दो हत्थे।
- राह दिखाना: बताना कहाँ से और कब।
- रास्ता खोलना: दरवाज़े, कर्ब, लोग।

पहली पंक्ति में, «आँगन, पहली कोशिश», मैंने लिखा «जूलिता और नोआ», «जूलिता और नोआ» और एक ख़ाली खाना। दूसरी में, «आँगन, दूसरी कोशिश», वही, पर तीसरे खाने में मैंने लिखा «गुनी»।

दो नाम दोहराए हुए और एक ख़ाली खाना: नहीं निकला। खाना भरा हुआ: निकला। मेरे पास आइरीन के लिए जवाब था, और वह मेरा अपना था।

और मैंने एक और बात लिखी, और छोटी: «फाटक को एक पत्थर भी रोक सकता है»।

मैंने उसे पेंसिल पर लगभग ज़ोर दिए बिना लिखा।



लेबल को समझना बाक़ी था।

“दोनों दरवाज़े, यानी फाटक के दोनों पल्ले,” जूलिता ने कहा।

“दोनों खोलने होंगे,” नोआ ने कहा।

“हम पहले बाहर से दीवार नाप सकते हैं,” मैंने कहा।

हम तीनों ने एक साथ इशारा किया। जूलिता ने, फाटक की ओर। नोआ ने, वर्कशॉप वाले कमरे की ओर। मैंने, सड़क की ओर।

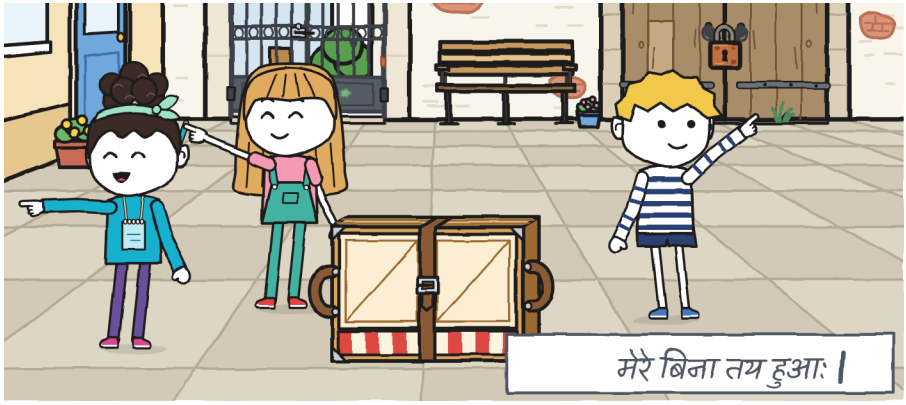

“बाद में,” दोनों ने कहा।

उन्होंने एक साथ कहा और एक ही सुर में, जैसे रटा हुआ हो। रटा ही था, मेरा ख़याल है। बरसों से।

मैं अकेला गया। मैं फाटक से निकला, जो मेरे पीछे क्लिक के साथ बंद हो गया, और इंची टेप से हिस्से-दर-हिस्से नापता हुआ, घुटने पर डायरी टिकाए हर संख्या लिखता हुआ, दीवार का चक्कर लगा आया। दीवार लंबी थी और एक

गली में खुलती थी जिसमें ठहरे पानी की गंध थी। और वहाँ, मोड़ पर, मुझे एक चीज़ मिली।

मैं जल्दी लौटा, वह चीज़ दिमाग़ में लिए और टेप अभी लपेटे बिना, एक मीटर पीला फुटपाथ पर घसीटता हुआ। जब मैं अंदर आया, जूलिता और नोआ किसी ऐसी बात पर हँस रही थीं जो मेरे मोहल्ले में आने से पहले की थी। वे कंधों से हँस रही थीं, आवाज़ किए बिना, और नोआ जूलिता की बाँह छूकर उसे रोक रही थी, और जूलिता रुक नहीं रही थी।

मैंने मुँह खोला।

"तय हो गया, गुनी," जूलिता ने कहा। "दोनों पल्ले हैं।"

पन्ने के निचले कोने में, छोटा और पेंसिल से, मैंने लिखा: मेरे बिना तय। और बग़ल में एक छोटी लकीर। मैंने उसे तब लिखा जब मेरा मुँह अब भी खुला था।

मैंने मुँह बंद किया। और डायरी भी।

वह लकीर मैंने दो दिन बाद देखी। वह मेरी थी। –ज.

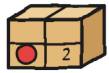

अध्याय 2

रास्ता कौन जानता है?

बुधवार को पहला हिस्सा था: दुकान से आँगन तक, सड़क से, छोटा थिएटर पीठ पर और लोग देखते हुए। मैंने दोपहर की क्लास एक फ़ाइल के हाशिये पर मीटर बनाते बिताई थी, एक नई पंक्ति और ख़ाली खानों के साथ, कि हम तीनों उन्हें भर सकें।

जब मैं दुकान पहुँचा, मीटर पहले से भरा हुआ था। हरे में।

जूलिता ने मेरी डायरी उस पन्ने पर खोल ली थी जहाँ यंत्र था और उसने अपनी इश्तिहार वाली लिखावट में एक पंक्ति जोड़ दी थी: «दुकान → आँगन»। उठाना के खाने में लिखा था «गुनी और नोआ»। राह दिखाना में, «जूलिता»। रास्ता खोलना में, फिर «जूलिता»। मार्कर ऊपर पड़ा था, खुला, उस सबूत की तरह जिसे छिपाने की किसी ने ज़हमत नहीं उठाई।

“तुम और नोआ उठाओगे,” जूलिता ने कहा। “मैं राह दिखाऊँगी, मुझे रास्ता आता है। और मैं आगे चलती हूँ, तो रास्ता भी मैं ही खोलूँगी।”

“हमने आते हुए सोच लिया था,” नोआ ने कहा।

उसने यह जीतने के लिए नहीं कहा। उसने ऐसे कहा जैसे पता बताया जाता है: क्योंकि यह सच था। वे दोनों कहीं से साथ आई थीं और रास्ते में उन्होंने सोच

लिया था। मैंने अपने रास्ते में वही सोचा था, पर एक फ़ाइल के हाशिये पर, और वह आने में नहीं गिना जाता।

हरे को मिटाया नहीं जाता। दूसरी लकीर।



"निकलने से पहले हम एक नक़्शा बना सकते हैं," मैंने कहा। "मोड़ों पर नंबर लगाकर।"

वह मेरे दिमाग़ में आधा बना हुआ था: दुकान का दरवाज़ा, कर्ब, जूतों की दुकान, छोटा चौक, मोड़ और हर एक का नंबर एक गोले में, रेलगाड़ी के स्टेशनों की तरह।

"नक़्शे की ज़रूरत नहीं," जूलिता ने कहा। "लंगड़ी मछली तक सीधा है।"

नोआ को हँसी आ गई। जूलिता को भी। छोटी हँसी नहीं: वह जो एक को आती है और पहली के ख़त्म होने से पहले दूसरी को लग जाती है, और लौट आती है, और पता नहीं चलता किसके पास है।

"कौन सी मछली?"

"लंगड़ी मछली, लंगड़ी मछली है," नोआ ने कहा, अभी भी दोहरी होती हुई।

"यह लंबी कहानी है," जूलिता ने कहा।

"और बहुत अच्छी," नोआ ने कहा।

मैंने इंतज़ार किया। पेंसिल हवा में थी, कहानी लिखने को तैयार, अगर वह रास्ते के काम आती। उन्होंने नहीं सुनाई। वे धीरे-धीरे शांत हुईं, आस्तीन से आँखें पोंछती हुईं, और जब एक दूसरी को देखती थी तो थोड़ी-सी फिर लौट आती थी, हिचकी की तरह।

मैंने पेंसिल नीचे रख दी। तीसरी लकीर।

मारा ने छोटा थिएटर दुकान के दरवाज़े पर, फुटपाथ पर, अपने डिब्बे से निकाला, और डिब्बा अपने लेबल और अपनी नौ मुहरों के साथ अंदर रह गया। नोआ ने पट्टा पहले छेद में बाँधा।

"ऐसे पहुँचकर जल्दी खुलेगा।"

यह अच्छी वजह थी। मैंने लिख ली: «छेद 1: जल्दी खुलता है»। बाक़ी नहीं लिखा, क्योंकि बाक़ी मुझे अभी पता नहीं था।

मैं आगे था और नोआ पीछे, हर एक का एक हाथ अपने हत्थे पर। आगे से सड़क दिखती है। पीछे से सिर्फ़ छोटा थिएटर दिखता है: एक मीटर लकड़ी और रंगा हुआ कपड़ा नाक से एक बित्ते की दूरी पर, जैसे अलमारी के पीछे चलना। नोआ का दूसरा हाथ पट्टे के पास था, आदत से या आइरीन के नियम से, और वह धीमी आवाज़ में गिन रही थी। क़दम गिन रही थी। मुझे आगे से सुनाई दे रहा था: «... इक्कीस, बाईस...», उसी लहजे में जिसमें लोग गुनगुनाते हैं।

आइरीन सबसे पीछे आ रही थीं, फ़ाइल और सीटी के साथ। वे यह नहीं बता रही थीं कि किधर। जब कर्ब आता तो कहतीं "रुको"। एक ही बार, बिना आवाज़ ऊँची किए, और हम रुक जाते, और ऐसा लगता जैसे पूरी सड़क हमारे साथ रुक गई हो।

जूलिता रास्ता बहुत अच्छा खोल रही थी। वह कुछ क़दम आगे थी, उलटी चलती हुई और बाँहें इस तरह हिलाती हुई जैसे ट्रक पार्क कर रही हो।

"रास्ता दो, थिएटर आ रहा है!"

जूतों की दुकान वाली दरवाज़े पर निकल आई, हाथ में आधा बँधा जूता लिए। कुत्ते वाले एक आदमी ने एक पोर्च में इंतज़ार किया; कुत्ते ने भी इंतज़ार किया, जो ज़्यादा मुश्किल है। दूर, मोहल्ले के दूसरे छोर पर, एक घंटी बजी। टिलिन।

“रायो अपनी परीक्षा की रिहर्सल कर रही है,” नोआ ने कहा। “वे साइकिल पर हैं, एक लिफ़ाफ़े के साथ। हम पैदल हैं, इसके साथ।”

“इसके साथ दौड़ा नहीं जाता,” आइरीन ने कहा।

टोन्यो ने मुझे सोमवार को बताया था: रायो के हर स्टेशन पर तीनों को साथ पहुँचना होता है, वरना नहीं गिना जाता। मैंने तब लिख लिया था, बिना यह जाने कि किसलिए।



हम फ़व्वारे वाले छोटे चौक पर पहुँचे। वह गोल है, चारों ओर बेंचें और कुछ कबूतर जो किसी के लिए नहीं हटते। जूलिता मुड़ी, दिशा चिल्लाकर बताई और फाटक रोकने के लिए बीच की ओर भाग गई।

“लंगड़ी मछली तक और मुड़ना!”

और वह गई। उसकी डंगरी दो लोगों के बीच एक पल दिखी और फिर कुछ नहीं।

फ़व्वारे के बीच में एक पत्थर की मछली है, एक छोटे खंभे के ऊपर, मुँह खुला हुआ, जैसे कुछ कहने वाली हो और फिर सोच में पड़ गई हो। मैंने उसे ध्यान से देखा। मेरी तरफ़ से उसके सारे पंख थे।

मैंने जल्दी सोचा, जो मेरी आदत नहीं है। मेरी आदत धीरे और फ़ुट्टे के साथ सोचने की है। पर छोटा थिएटर भारी था, नोआ पीछे थी और कुछ देख नहीं पा

रही थी, और सड़क हमारे आसपास चलती जा रही थी। मैंने डायरी हत्थे से टिकाई और दो पंक्तियाँ लिखीं:

1. फ़व्वारे की मछली: पंख दिख रहे हैं, सारे। लंगड़ी नहीं है। कोई और मछली होगी।
2. मुड़ना: किस तरफ़? बाएँ, तंग गली। दाएँ, चौड़ी गली। छोटा थिएटर चौड़े रास्ते से बेहतर जाता है।

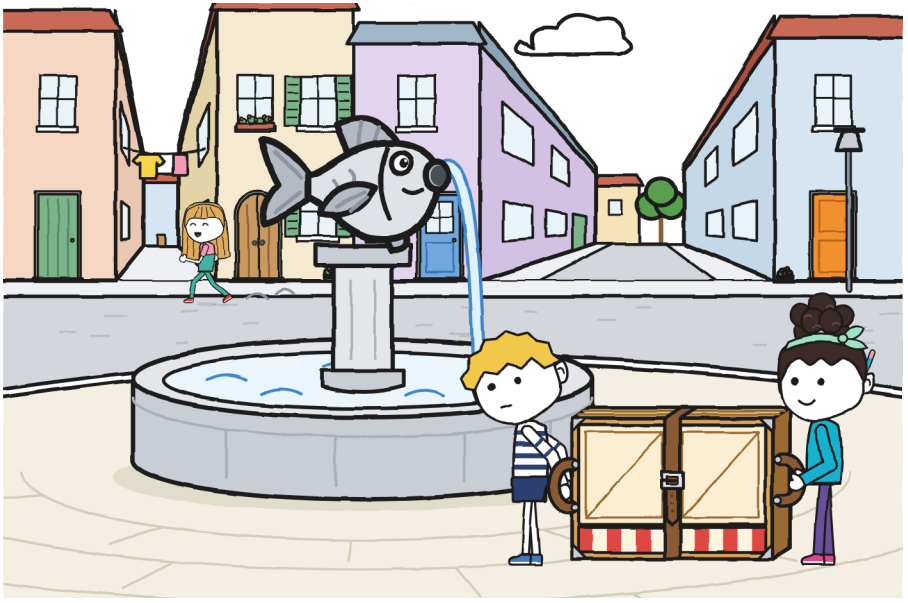

नीचे, दाईं ओर एक मोटा तीर। तर्क बेदाग़ था। उसमें बस शुरुआत ही ग़लत थी।

"अभी मुड़ूँ?" मैंने पीछे की ओर पूछा।

"लंगड़ी मछली पर!" नोआ ने छोटे थिएटर के पीछे से कहा।

नोआ को लकड़ी के सिवा कुछ दिख नहीं रहा था। वहाँ से लंगड़ी मछली एक शब्द थी, और शब्द ठीक से कहा गया था।

मैं दूसरी मछली ढूँढता रहा। मैंने पोर्च देखे, साइनबोर्ड देखे, एक मछली की दुकान जो हार्डवेयर की दुकान निकली। कोई नहीं थी। मैं दाएँ मुड़ गया।



किसी ने «मोड़» नहीं कहा। किसी ने पट्टा नहीं पकड़ा। पहले छेद में बकल ज़्यादा नहीं टिकता।

क्लैक। क्लैक। क्लैक।

पैनल धीरे-धीरे खुले, एक के बाद एक, नोआ के चारों ओर, उस आर्टिचोक की पत्तियों की तरह जिसे कोई अंदर से खोल रहा हो। आइरीन ने सीटी बजाई। जब आवाज़ रुकी, सड़क के बीचोबीच एक थिएटर था। और थिएटर के अंदर, नोआ।

“नमस्ते,” उसने खिड़की से कहा।

उसके हाथ ऊपर थे, हिंजों से दूर, जैसा उन्हें बताया गया था। पट्टा ज़मीन तक लटक रहा था। मेरे हाथ में अब भी मेरा हत्था था, जो अब किसी चीज़ का हत्था नहीं था: वह एक मंच का किनारा था।

आइरीन ने नोआ के हाथ देखे। फिर मेरे। उन्होंने सच में देखे, उँगली-दर-उँगली, दोनों तरफ़ से। सब पूरे थे: पैनल हल्के होते हैं और धीरे खुलते हैं।

“राह कौन दिखा रहा था?” उन्होंने पूछा।

किसी ने जवाब नहीं दिया। जो राह दिखा रही थी, वह दो सड़कें आगे एक फाटक रोके खड़ी थी।

क्लैक, क्लैक, क्लैक!

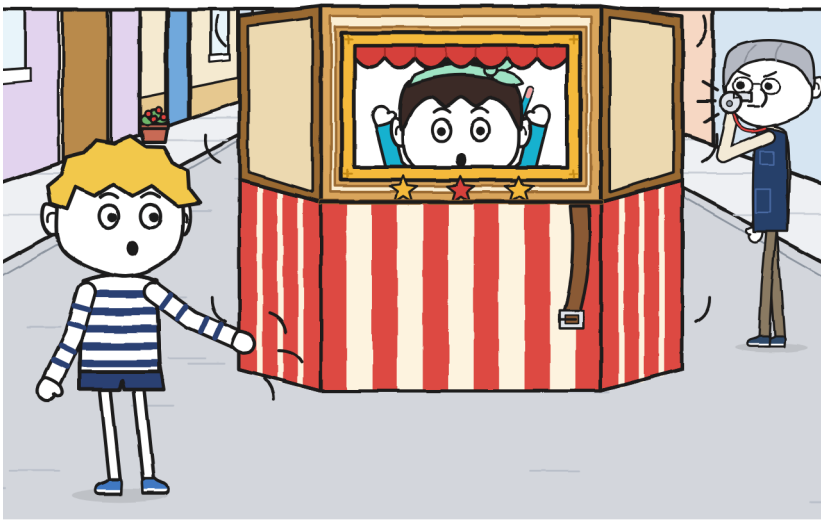

हमने उसे आइरीन और मैंने तह किया, हाथ बाज़ुओं पर, बिना जल्दी, पैनल-दर-पैनल। नोआ ने, बाहर निकलकर, पट्टा कसा और इस बार उसे दो बार खींचा। इस बीच मैंने नापा: मेरे पैर से फ़व्वारे तक, चार मीटर। मैंने उसे लिखा, जब टेप ज़मीन पर अब भी तना हुआ था, मेरे जूते से पत्थर के किनारे तक।



जूलिता दौड़ती हुई लौटी।

"पर लंगड़ी मछली पर तो!"

"कौन सी लंगड़ी मछली?"

"वह!" उसने फ़व्वारे की ओर इशारा किया। "बाएँ। हमेशा की तरह।"

"«हमेशा» मेरे आने से पहले होता था।"

मैंने यह ग़ुस्से में नहीं कहा। मैंने ऐसे कहा जैसे तारीख़ सुधारी जाती है। जूलिता की बाँह फ़व्वारे की ओर एक पल ज़्यादा तनी रही, फिर वह आइरीन की ओर मुड़ी, जिनकी फ़ाइल खुली थी।

“वह तो गुनी खो गया है।”

मैं खोया नहीं था। मुझे ठीक पता था कि मैं कहाँ हूँ: फ़व्वारे से चार मीटर पर। मैंने अभी नापा था।

नोआ हम दोनों को देख रही थी, कॉपी स्वेटर से लगाए बंद किए। आइरीन ने कुछ लिखा। उन्होंने नहीं बताया क्या।

यह भी मेरे बिना तय हुआ। चौथी लकीर।

मैंने यह ज़ोर से और लोगों के सामने कहा। मुझे पता है। –ज.



उन्होंने मुझे मछली का दूसरा पहलू दिखाया। हम तीनों ने फ़व्वारे का चक्कर लगाया, तह किया हुआ छोटा थिएटर नोआ और मेरे बीच और आइरीन पीछे। उसका एक पंख नहीं है, बायाँ। दुकान की सड़क से आओ तो वह दिखता नहीं: मछली अपना अच्छा पहलू दिखाती है, तस्वीरों में पोज़ देने वालों की तरह। उसे देखने के लिए पता होना चाहिए कि वह नहीं है।

मैंने उसे दोनों तरफ़ से बनाया, एक-दूसरे के बग़ल में। एक ही मछली, दो मछलियाँ।

हमने मोड़ दोहराया। हम कुछ मीटर पीछे गए, गली के मुहाने तक, और फिर किया, इस बार जूलिता मेरे बग़ल में। पहली बार मैंने «मोड़» बहुत जल्दी कह दिया, और नोआ ने एक पोर्च के सामने पट्टा पकड़ा, बेकार में। दूसरी बार, बहुत देर से: आधा छोटा थिएटर मोड़ में और नोआ अँधेरे में पट्टा टटोलती हुई। तीसरी

बार हो गया। ठीक से हुआ, बिना क्लैक के। पर कोई बोल नहीं रहा था। जूलिता भी नहीं, जो हमेशा बोलती है।

तभी रायो सड़क से गुज़री: ज़ोई, ब्रूनो और टोन्यो, क़तार में, हाथ हैंडल पर। मोड़ पर टिलिन। ज़ोई आगे, चोटी हवा में; ब्रूनो बीच में, लिफ़ाफ़ा टोकरी में; टोन्यो आख़िरी, उँगली घंटी पर। उन्होंने बिना रुके और बिना एक-दूसरे को छुए फ़व्वारे का चक्कर लगाया, हर वक़्त एक-दूसरे से बराबर दूरी पर, घड़ी की उन सुइयों की तरह जो कभी एक-दूसरे को नहीं पकड़तीं।

"स्टेशन एक, पहली बार में," टोन्यो ने गुज़रते हुए कहा।

उसने यह हमारे लिए नहीं कहा। टोन्यो आँकड़े ज़ोर से बताता है, चाहे सुनने वाला कोई न हो; यही उसे रायो का बनाता है। पर हमने सुन लिया।

जूलिता की बाँहें झुकी हुई थीं। जूलिता की बाँहें कभी नहीं झुकतीं: वे जाती हैं, आती हैं, इशारा करती हैं, रास्ता खोलती हैं। उस शाम, जब घंटी दूर जा रही थी, वे दोनों तरफ़ लटकी थीं, बिना छोटे थिएटर के दो हत्थों की तरह।



हम आँगन में लगभग रात को पहुँचे। आख़िरी हिस्से में राह दिखाने की ज़रूरत नहीं पड़ी: फाटक दिख रहा था। जूलिता ने उसे हाथ से पकड़ा और "रास्ता दो!"

नहीं कहा। मारा अंदर इंतज़ार कर रही थीं। उन्होंने छोटा थिएटर अपने डिब्बे में रखा और उसे दुकान ले गईं, अपनी शेल्फ़ पर सोने के लिए।

मैंने आज का हाल मीटर में लिखा, हरी पंक्ति के नीचे, और एक नया स्तंभ जोड़ा, पतला, पेंसिल से: «खुल गया · तीन बार दोहराया»। तीनों खानों में नाम थे और फिर भी सड़क पर एक थिएटर खुल गया था। मीटर में कुछ कम था। मुझे नहीं पता कि क्या। मैंने बग़ल में एक बड़ा प्रश्नचिह्न बनाया, उस आकार का जो मैं तब बनाता हूँ जब सवाल मोहल्ले का नहीं, यंत्र का होता है।

उस पंक्ति में मेरा नाम दो बार आता है। और मैं दोनों में नहीं था। —ज.

घर पर, खाने के बाद, मैं मेज़ पर बैठा, लैंप जलाए, और डायरी आख़िरी पन्ने पर खोली।

वहाँ मैंने वह बनाया जो मुझे मंगलवार को दीवार के पीछे मिला था। सावधानी से, फ़ुट्टे के साथ, उन मीटरों के साथ जो मैंने डायरी घुटने पर रखकर लिखे थे। वह बहुत अच्छा बना। इतना अच्छा कि मैं पेंसिल रोके उसे कुछ देर देखता रहा।

मेरी माँ ने शुभ रात्रि कहने के लिए दरवाज़े से सिर निकाला। तब तक मेरा हाथ ड्रॉइंग के ऊपर था। उन्होंने कहा, मेरा हाथ देखा, कुछ नहीं पूछा और दरवाज़ा बंद कर दिया।

मैंने अकेले होते हुए भी उसे हाथ से ढक लिया। एक तरफ़ से दीवार का एक टुकड़ा और आधा ताला झाँक रहा था।

मैंने सोचा: «कल वे फिर नाकाम होंगे। तब मैं इसे निकालूँगा»।

मुझे यह अच्छी योजना लगी। उसका वक़्त भी तय था।

यह पन्ना मैंने गुरुवार को पढ़ा। मुझे अच्छा नहीं लगा। बुधवार वाला भी नहीं। —ज.



अध्याय 3

क्या गुनी का नक़्शा काम आता है?

उस रात, जब हाथ ढकते-ढकते थक गया, मैंने पूरा नक़्शा बना डाला।

आँगन ऊपर से देखा हुआ, जैसे कबूतर उसे देखते हैं। दीवार नापी हुई, हिस्से-दर-हिस्से, उन संख्याओं के साथ जो मैंने मंगलवार को घुटने पर लिखी थीं। फाटक, अपने आप बंद होने के तीर के साथ। फ़व्वारा, मछली उसके बुरे पहलू से बनी हुई, ताकि वह फिर किसी को धोखा न दे। दुकान, एक कोने में, छोटी। तीन हिस्से, एक गोले में नंबर लगे हुए। और, दीवार के पीछे, मंगलवार वाली चीज़।

नक़्शा बहुत अच्छा बना। उन बेहतरीन नक़्शों में से जो मैंने बनाए हैं, और मैंने बहुत बनाए हैं। मैंने उसे कुछ देर लैंप झुकाकर देखा, ताकि पेंसिल की परछाईं न पड़े। फिर उसे चार तह करके, तहों को नाख़ून से दबाते हुए, डायरी के अंदर रख दिया, दो ऐसे पन्नों के बीच जिनका उससे कोई लेना-देना नहीं था।



गुरुवार को, दुकान में, नोआ गिन रही थी।

वह फुटपाथ पर थी, शोकेस के सामने, और कर्ब की ओर लंबे और एक जैसे क़दमों से चल रही थी, अपने पैरों को देखे बिना। वह आगे देख रही थी, जहाँ वह जा रही थी, और होंठ हिला रही थी।

“दरवाज़े से कर्ब तक, छह क़दम। कर्ब से लैंप-पोस्ट तक, ग्यारह।”

“यह तो टेप से नापा जाता है,” मैंने कहा।

“मैं क़दमों से नापती हूँ। वे हमेशा मेरे साथ रहते हैं।”

मैंने सोचा। यह सच था: टेप निकालना पड़ता है, खींचना पड़ता है, पैर से दबाना पड़ता है, और फिर वह अपने आप लिपट जाता है और उँगली पर काट लेता है। क़दम घर पर नहीं भूले जाते।

“तुम्हारा एक क़दम कितना होता है?”

“एक।”

मैंने उसका एक क़दम नापा। मैंने टेप दुकान के फ़र्श पर तान दिया और नोआ ने उस पर एक लंबा क़दम रखा, अपने वाला, बिना सोचे, जैसे कोई दस्तख़त करता है। मैंने झुककर निशान पढ़ा: अट्ठावन सेंटीमीटर। उसने उसे अपनी कॉपी में लिखा। मैंने अपनी डायरी में। दोनों ने एक ही बात लिखी: «नोआ का 1 क़दम = 58 सेमी»।

“और तुम्हारा?” उसने पूछा।

मुझे नहीं पता था। मैंने ख़ुद को नापा। मैंने टेप के ऊपर एक क़दम रखा, सामान्य वाला, जो स्कूल जाने वाला होता है, और नोआ ने झुककर पढ़ा, क्योंकि मैं ऊपर से पैर हिलाए बिना नहीं देख सकता था: इक्यावन सेंटीमीटर। उसने उसे भी लिख लिया। मैं उम्र भर क़दम साथ लिए चलता रहा था और उन्हें कभी गिना नहीं था।

जूलिता हमें काउंटर से देख रही थी, बाँहें बाँधे और एक भौंह उठाए, उस इंसान की तरह जो दो घड़ियों को एक ही वक़्त बताते देखता हो।

मुझे लगा था नोआ एक और जूलिता होगी। वह नहीं है। नोआ गिनती है।



हम आइरीन के साथ आँगन गए। जूलिता और नोआ अपना विचार आज़माना चाहती थीं: फाटक के दोनों पल्ले खोलना।

पहला पल्ला खुलता है और अपने आप बंद हो जाता है: हम उसे जानते थे। दूसरा नहीं खुला। दोनों ने उसे खींचा, हर एक दोनों हाथों से और पैर ज़मीन में गड़ाए, जूलिता लाल और नोआ ज़ोर से तीन तक गिनती हुई, और तीन पर कुछ नहीं हुआ। आइरीन झुककर देखने लगीं। उस पर रंग के ऊपर रंग है, और ज़मीन में एक पेंच है जो उसे जकड़े हुए है, उँगली जितना मोटा।

“तो फिर लेबल ग़लत है,” जूलिता ने कहा।

“पक्का,” नोआ ने कहा।

उन्होंने दो सेकंड में तय कर लिया। मैंने गिने। मैंने लकीर के लिए पेंसिल निकाली। यह पाँचवीं थी।

मैंने नहीं खींची।

पेंसिल काग़ज़ से एक उँगली दूर रुक गई। मैंने पन्ने के कोने में लकीरों की क़तार देखी: चार, अच्छी बनी हुई, सीधी, सब एक आकार की। मैंने उन्हें बहुत ध्यान से बनाया था। और एक कम थी।

मंगलवार को, दीवार के पीछे, मैंने भी एक बात किसी से पूछे बिना तय की थी: चुप रहना।

मेरे बिना तय के नीचे, उसी लिखावट में और पेंसिल से, मैंने एक और पंक्ति लिखी: उनके बिना तय। और एक लकीर। वह बाक़ियों से ज़्यादा टेढ़ी निकली।

“लेबल ग़लत नहीं है,” मैंने कहा। वह मेरी इच्छा से ऊँचा निकला। “आँगन का एक और दरवाज़ा है। पीछे, नहर वाली गली में। वह पुराना है और उस पर ताला है। मुझे वह मंगलवार को मिला था।”

मैंने नक़्शा पन्नों के बीच से निकाला और तह किए हुए छोटे थिएटर के ऊपर खोल दिया, जो ज़मीन पर पड़ा था और मेज़ का काम कर रहा था। तहें उसे चार टुकड़ों में, सलीब की तरह, खिड़की जैसा बाँट रही थीं।

“मंगलवार को?” जूलिता ने कहा।

“मंगलवार को। मैंने इसे बाद में सही साबित होने के लिए रख लिया था।”

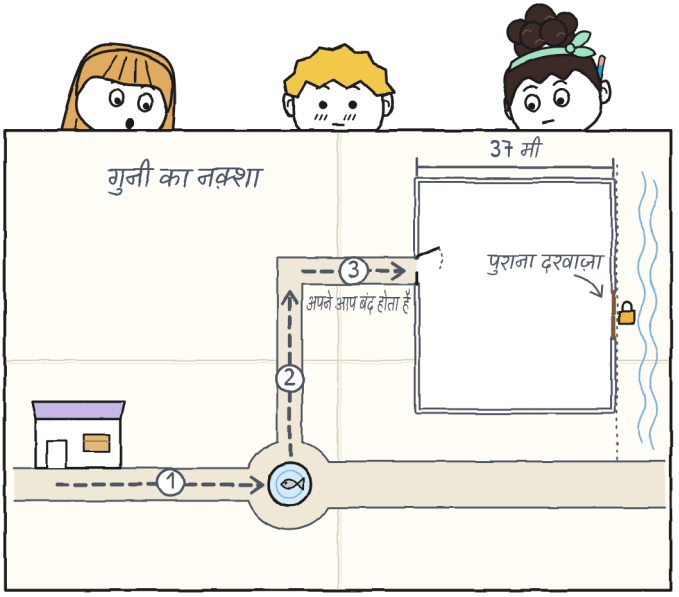

तीन सिर काग़ज़ पर झुक गए। दीवार: सैंतीस मीटर। फाटक, एक तरफ़, अपने «अपने आप बंद होता है» के साथ। और दूसरी तरफ़, दो पल्लों वाला एक दरवाज़ा, जिस पर ताला सामने से बना था ताकि साफ़ दिखे: पुराना दरवाज़ा।

कुछ देर किसी ने कुछ नहीं कहा। मैंने नापा: वह लंबी थी। दीवार के उस पार शतरंज की आवाज़ आ रही थी, एक मोहरा एक बिसात से, कभी-कभी, उस घड़ी की तरह जिसे कोई जल्दी नहीं।

"ठीक है," नोआ ने कहा। और उसने दरवाज़ा अपने नक़्शे में उतार लिया।

उसने फ़िरोज़ी पेंसिल से, सावधानी से, मेरे नक़्शे के चौखानों को नोक से गिनते हुए उतारा, ताकि उसे सही जगह रख सके। उसने और कुछ नहीं पूछा। नोआ के लिए, जो दरवाज़ा है, वह लिख लेने की चीज़ है।

जूलिता ने «ठीक है» नहीं कहा। वह पैर हिला रही थी। उसका लाल जूता आँगन के फ़र्श पर आगे-पीछे जा रहा था, टक, टक, टक, एक ऐसी लय में जो मैं जानता हूँ: उन बातों की जो तुरंत नहीं कही जाने वालीं।

"कल यह हमारे बहुत काम आता।"

"हाँ।"

कल, डायरी में नक़्शा होते हुए, मैंने अपने पैर से फ़व्वारे तक चार मीटर नापे थे, जब नोआ एक थिएटर के अंदर थी।

आँगन में कोई कोना नहीं है। मैंने ढूँढा भी नहीं। मैं वहीं खड़ा रहा जहाँ था, नक़्शा खुला और दोनों हाथ उस पर, कि हवा उसे उड़ा न ले जाए।

मैंने «ठीक है» नहीं कहा क्योंकि अभी सच नहीं था। –ज.

हम तीनों उसे देखने गए, आइरीन के साथ। हम फाटक से निकले, जो हमारे पीछे क्लिक के साथ बंद हो गया, और दीवार का चक्कर लगाया। नोआ ने उसे

गिना, धीमे, होंठों से: चौंसठ क़दम। मेरे पास पहले से था: सैंतीस मीटर। मैंने मन में किया, चौंसठ गुणा अट्ठावन, और सैंतीस और कुछ निकला। वही निकला।

जब मैंने कहा, नोआ ने मुझे देखा। उसने कुछ नहीं कहा, पर अपने क़दमों के बग़ल में «37 मी» लिखा, और मैंने अपने मीटरों के बग़ल में «64 क़दम» लिखा।

नहर वाली गली तंग है और उसमें ठहरे पानी की गंध है। अंत में रेलिंग दिखती है, और उसके पीछे नहर, जो बिना देखे गुज़रती है। पुराना दरवाज़ा लकड़ी का है, दो पल्लों का, किसी दैत्य के बिस्तर जितना चौड़ा। नोआ ने उसे एक किनारे से दूसरे तक नापा: तीन क़दम। मैंने नापा: एक मीटर पचहत्तर सेंटीमीटर। लगभग दो फाटक। लकड़ी बारिश में भीगते-भीगते सलेटी हो गई है। ताले पर ताले से ज़्यादा ज़ंग है।

जूलिता ने उसे एक उँगली से छुआ, सिर्फ़ नोक से, जैसे किसी ऐसी चीज़ को छूते हैं जो काट सकती हो।

“सालों से बंद है,” आइरीन ने कहा। “मैंने इसे हमेशा ऐसा ही देखा है।”

आइरीन ने केंद्र का रजिस्टर ढूँढा, जो वे फ़ाइल में रखती हैं, पन्ना-दर-पन्ना, गीले अँगूठे से पलटते हुए, एक पीले पन्ने तक।

“यह रहा। जब यह दरवाज़ा इस्तेमाल होता था, आँगन में दो जगहों से घुसते थे: फाटक से या यहाँ से। इसे कहते थे «दो दरवाज़ों वाला»। और सारे समूहों में से सिर्फ़ थिएटर आँगन में रिहर्सल करता है।”

पन्ने पर आँगन का एक पुराना नक़्शा था, स्याही से, उसके दोनों दरवाज़ों के साथ, और एक शीर्षक: दो दरवाज़ों का आँगन। वह मेरे वाले जैसा था। ज़्यादा पुराना और ख़राब नापा हुआ, पर वैसा ही। मैंने उसके दरवाज़े गिने: दो। मेरे वाले में भी दो। पहली बार किसी और के नक़्शे ने मुझे सही ठहराया था, और उसे उस

इंसान ने बनाया था जिसने मुझसे बहुत पहले, जब मुझे पता भी नहीं था कि यह मोहल्ला कहाँ है।

“तो लेबल कोई पहेली नहीं है,” नोआ ने कहा।

“यह एक पता है,” मैंने कहा।

«आँगन का वर्कशॉप। दोनों दरवाज़ों से प्रवेश।» वह ठीक लिखा था। वह बस पुराना था।

मारा ने बाद में कहा कि उन्होंने वह ताला नौ बार देखा। उन्हें लगा था कि बंद दरवाज़ा अब गिनती में नहीं आता। –ज.



चाबी फ़ाइल में थी, एक लिफ़ाफ़े में: «पुराना दरवाज़ा। खोना मत»। आइरीन ने उसे दो उँगलियों से निकाला, उसे ऐसे देखा जैसे किसी को देखते हैं जिसे बहुत दिनों से न देखा हो, और ताला खोला। मुश्किल हुआ। पहले घूमी नहीं; फिर अचानक घूम गई। दरवाज़े से जहाज़ जैसी आवाज़ आई।

अंदर, आँगन में, शतरंज वालों ने मेज़ें धूप में निकाल रखी थीं। किसी ने सिर नहीं उठाया। सालों से बंद एक दरवाज़ा उनके बग़ल में जहाज़ जैसी आवाज़ से खुलता है और शतरंज वाले सिर नहीं उठाते: यह भी खेलने का एक तरीक़ा है।

आइरीन ने छोटा थिएटर बीच में खोला, यह देखने के लिए कि दोनों दरवाज़ों के बीच कितनी जगह बचती है। उन्होंने उसे नोआ के साथ खोला, दोनों के हाथ बाज़ुओं पर। क्लैक, क्लैक, क्लैक। जगह बहुत बची।

छोटे थिएटर की खिड़की से एंटोनियो अंकल दिख रहे थे, टोपी आँखों पर और छड़ी घुटनों के बीच, एक बिसात के सामने। वे कोई चाल सोच रहे थे। थोड़े

खर्राटे ले रहे थे। मैंने उन्हें कुछ देर चौखटे के अंदर रहने दिया, देखता रहा, और हिलना नहीं चाहा, कि तस्वीर न बदले।

"शनिवार को मैं दोनों खोलूँगी," आइरीन ने कहा। "साइकिलें पुराने दरवाज़े से आएँगी, नहर वाली गली से। पैदल सामान फाटक से, फुटपाथ से। इस तरह वे टकराएँगे नहीं।"

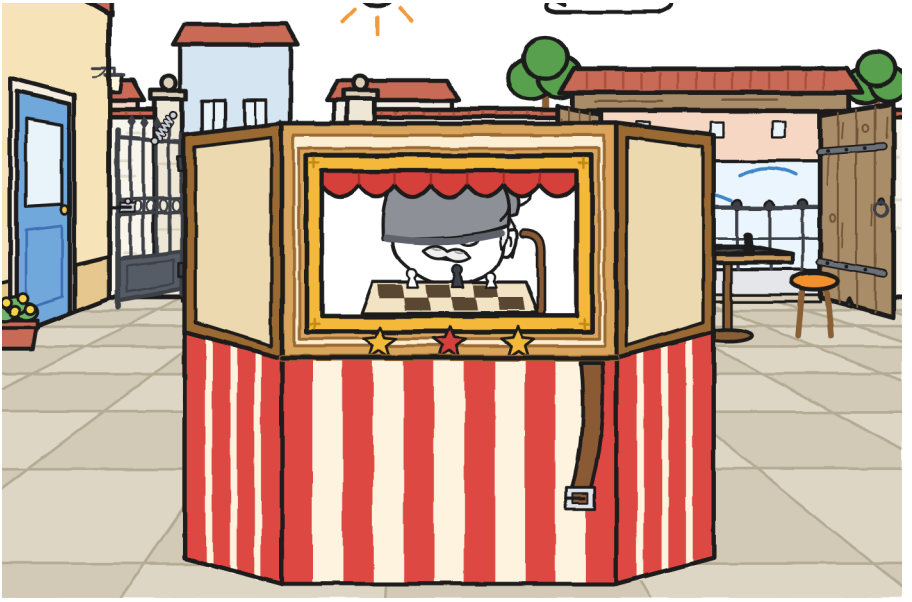

"पर पुराना ज़्यादा चौड़ा है," जूलिता ने कहा। "और अपने आप बंद नहीं होता।"

"और फाटक तुम्हारा है। अगर वर्कशॉप छोटा थिएटर किसी चौक पर ले जाए, तो इससे बुरे दरवाज़े होंगे।"

जूलिता ने मुँह खोला। एक पल खुला रखा, वाक्य तैयार लिए, और कहा नहीं। उसने नोआ को देखा। मुझे देखा।

"तुम क्या कहते हो?"

पूरे हफ़्ते में पहली बार था। मैंने उसे तारीख़ के साथ लिखा: «गुरुवार 29। तुम क्या कहते हो?»। मैंने जवाब देने से पहले लिखा, ताकि जवाब सोचते हुए सवाल भूल न जाऊँ।

मैंने कहा फाटक, पर अभ्यास के साथ। नोआ ने भी वही कहा। जूलिता ने कहा ठीक है, और इस बार वह आधा सच था। पहले से एक आधा ज़्यादा।



फिर हमने मीटर ठीक किया। हमने उसे तह किए हुए छोटे थिएटर के ऊपर रखा, जो अब हमारी हमेशा की मेज़ था, हालाँकि उसे बने दो ही दिन हुए थे। उसमें तीन खाने थे, और कोई भी कल के काम का नहीं था, न मेरे वाले के।

नया खाना हमने तीनों ने मिलकर बनाया। चौखटा मैंने बनाया, पेंसिल से। नाम जूलिता ने लिखा, हरे में। छोटा चित्र नोआ ने बनाया, फ़िरोज़ी में: एक मुँह, लकीरों वाला, जैसी रेडियो से निकलती हैं।

- आगाह करना: जो पता हो, वह बताना।

बुधवार की पंक्ति में, नए खाने में, जूलिता ने लिखा: «कोई नहीं»। मंगलवार की में, मैंने लिखा: «गुनी, नहीं»। मैंने धीरे लिखा और अपनी हमेशा वाली लिखावट में, न बड़ी, न छोटी, और मिटाया नहीं।

तीन का मीटर चार खानों का है। मैं शिकायत नहीं करता। चौथा वह है जो मुझे सबसे मुश्किल लगता है। –ज.



हम फ़व्वारे से लौटे। शाम हो रही थी, और पानी डायरी के रंग का हो गया था। मैं मछली के सामने रुका, उसके लंगड़े पहलू की ओर। उसका पंख वैसे ही नहीं था जैसे बुधवार को, पर अब मुझे उसे देखना आता था।

“मुझे कहानी सुनाओगी?”

जूलिता और नोआ ने एक-दूसरे को देखा। वे हँसी नहीं। उनमें कुछ झलका, बुधवार की हँसी का एक कोना, और उन्होंने उसे अपने पास रख लिया, हर एक ने अपना।

“लंबी है,” जूलिता ने कहा।

“शनिवार को,” नोआ ने कहा। “अगर पहुँचे तो।”

यह «नहीं» नहीं था। मैंने नक़्शा डायरी में रख लिया, इस बार बिना तह किए, आधा नक़्शा बाहर झाँकता हुआ।

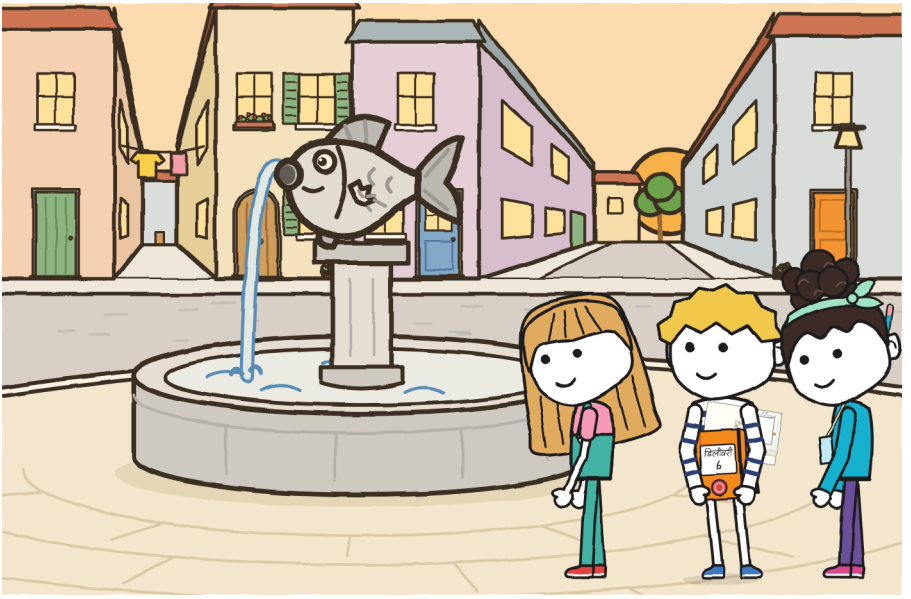



अध्याय ५

क्या कोई भी राह दिखा सकता है?

शुक्रवार को टोन्यो दुकान आया घड़ी, एक पेंसिल और एक क्लिपबोर्ड पर क्लिप से लगे रायो के पंजीकरण-पन्ने के साथ। उसने उसे काउंटर पर रख दिया, ताकि हम देख सकें, उस ट्रॉफ़ी की तरह जो अभी जीती नहीं गई।

मोहल्ले की प्रतियोगिता · शनिवार 31। टीम: रायो। उसके नीचे, तीन नाम नंबर लगे हुए: ज़ोई, टोन्यो, ब्रूनो। सब एक ही नुकीली लिखावट में, जो टोन्यो की नहीं थी। कोई नाम कटा हुआ नहीं।

“ज़ोई ने लिखा है,” उसने कहा। “ब्रूनो ने बोलकर लिखवाया: «ब्रूनो, ब से»।”

“और ज़ोई?”

“ब्रूनो ने लिखा। ब से।”

मैंने जाँचा। «ब» था, और बहुत पक्का था, उस तरह का जो तब लिखा जाता है जब कोई आपकी पेंसिल को देख रहा हो।

फिर वह अपने डिब्बे पर बैठ गया, वही «फ़िलहाल» वाला, और घड़ी को शून्य पर एक क्लिक के साथ किया, जो पूरी दुकान में सुनाई दिया।

“आज मैं समय लेता हूँ। राय नहीं देता। लिखता हूँ कि क्या दोहराना पड़ा।”

टोन्यो रायो का भी है और दुकान का भी, और उस शाम लगता था उसने तय कर लिया था कि दोनों कैसे हुआ जाए: क्लिपबोर्ड पर, अपनी टीम का पन्ना; कलाई पर, हमारा समय।



तीन विचार थे, हर सिर का एक। नोआ का: बारी। तीन हिस्से, और हर एक में कोई और राह दिखाए। मेरा: कि राह दिखाना और रास्ता खोलना एक ही इंसान का काम हो, उसका जो ख़ाली चलता है, क्योंकि उठाने वाले दोनों को सिर्फ़ छोटा थिएटर दिखता है; मुझे पता है क्योंकि बुधवार को मैं उनमें से एक था और मैंने ज़्यादातर रंगा हुआ कपड़ा देखा था। जूलिता का: अभी शुरू करो।

मैंने कहा कि पहले पूरा रास्ता नक़्शे पर देखना होगा।

“हम चलते हुए देखेंगे,” जूलिता ने कहा।

वह जीत गई। चलते हुए रास्ता बहुत जल्दी देखा जाता है।

“पहले कौन राह दिखाएगा?” नोआ ने पूछा।

हम तीनों ने एक साथ इशारा किया। मंगलवार को हम कर चुके थे, और हर एक ने अलग जगह की ओर इशारा किया था: फाटक, कमरा, सड़क। इस बार किसी ने जगह की ओर इशारा नहीं किया। मैंने नोआ की ओर किया, नोआ ने जूलिता की ओर और जूलिता ने मेरी ओर। तीन बाँहें घेरे में, उस पहिये की तीलियों की तरह जो घूमने वाला नहीं है, और बीच में, ज़मीन पर, तह किया हुआ छोटा थिएटर। किसी ने अपनी ओर इशारा नहीं किया।

टोन्यो ने बिना नज़र उठाए लिख लिया। आइरीन दरवाज़े पर इंतज़ार कर रही थीं, फ़ाइल सीने से लगाए, वे भी राय दिए बिना। उस शाम दुकान में दो लोग थे

जो राय नहीं दे रहे थे, और तीसरी, मारा, जो कभी ज़ोर से राय नहीं देतीं, तो योजना हमने घेरे का चक्कर लगाकर निकाली:

1. दुकान → फ़व्वारा: राह दिखाएगी जूलिता।
2. फ़व्वारा → नुक्कड़: राह दिखाएगा गुनी।
3. नुक्कड़ → आँगन: राह दिखाएगी नोआ।



छोटा थिएटर उठाने से पहले, जूलिता ने कहा:

"एक बात।"

उसने पहले से बताया नहीं था। वह मेरे सामने खड़ी हो गई; छोटे थिएटर के सामने नहीं, न नोआ के, न दरवाज़े के: मेरे सामने, बाँहें शरीर से सटाए जैसे उन्हें बाँध लिया हो कि कहीं निकल न जाएँ।

"बुधवार को मैंने एक ऐसा इशारा बताया जो सिर्फ़ नोआ समझती थी और फिर कहा कि तुम खो गए हो।"

उसने और कुछ नहीं कहा। ज़रूरत नहीं थी: सब था। क्या हुआ था, किसने किया था और किससे। मुझे इसी के लिए एक पन्ना चाहिए होता और नीचे तारे वाली एक टिप्पणी।

मैंने उसके पैर देखे। जूलिता के पैर जाने के लिए बने हैं; जब वह बोलती है, तो दोनों में से एक किसी और जगह की ओर चल रहा होता है। इस बार दोनों स्थिर थे, साथ-साथ, टाइलों पर जमे हुए जैसे उन्हें ब्रेक लगाकर खड़ा कर दिया गया हो। मेरे पीछे नोआ, अपने हत्थे पर हाथ रखे, फ़र्श को बहुत दिलचस्पी से देख रही थी, ताकि किसी को परेशान न करे। टोन्यो की पेंसिल पन्ने से एक सेंटीमीटर ऊपर रुकी हुई थी।

"ठीक है," मैंने कहा।

मैंने यह नोआ से सीखा था, गुरुवार को। यह पूरा निकला।

और क्योंकि मुझे बिना सवाल के कुछ मानना नहीं आता, मैंने एक पूछ लिया:

“मछली का पंख किस तरफ़ से नहीं है?”

“बायाँ, जैसे तुम पहुँचते हो,” जूलिता ने बिना सोचे जवाब दिया, जैसे जवाब याद किया हुआ हो। “फ़व्वारे पर, बाएँ मोड़। मैं तुम्हें पाँच क़दम पहले बता दूँगी।”

“यह होता है इशारा।”

उसमें तरफ़ थी, जगह थी और चेतावनी थी। मैंने उसे डायरी में ज्यों का त्यों उतार लिया, उसके «जैसे तुम पहुँचते हो» के साथ, जो ठीक वही था जो बुधवार को कम था।



दोनों पैर स्थिर। चित्र में जाँच लो। –ज.

पहला हिस्सा। नोआ ने पट्टा दूसरे छेद में बाँधा। मैंने कहा कि तीसरे में ज़्यादा टिकता है।

“तीसरे में देर से खुलता है,” नोआ ने कहा। “और पहुँचकर जल्दी होती है।”

मैंने एक बार ज़ोर से कहा और हार गया। हत्थे उतने ही भारी थे।

हम निकले। आइरीन सबसे पीछे, दस क़दम दूर, फ़ाइल के साथ; टोन्यो सड़क पर, साइकिल हाथ में और आँखें कलाई पर। जूलिता तीन क़दम आगे थी, और छोटे चौक के प्रवेश पर उसने एक बाँह बाईं ओर उठाई।

“पाँच क़दम... बाएँ मोड़!”

“पट्टा!” नोआ ने कहा। और उसे पकड़ लिया।

हमने लंगड़ी मछली का चक्कर लगाया, जैसे हमेशा से करते आए हों। मेरी तरफ़ से मछली के अब भी सारे पंख थे; मैं अब उस पर भरोसा न करना सीख चुका था। कोई क्लैक नहीं।

“पहला हिस्सा: छह मिनट,” टोन्यो ने कहा। “दोहराया: कुछ नहीं।”



फ़व्वारे पर हमने जगह बदली। जूलिता और नोआ हत्थों पर; मैं ख़ाली। यह मेरी ज़िंदगी में पहली बार था कि मैंने पेंसिल के सिवा कुछ और चलाया।

मैंने तैयारी की थी। पिछली रात लैंप के नीचे मैंने नक़्शे पर तंग गली नापी थी: दो कर्ब, एक निकला हुआ पोर्च, एक नाली का ढक्कन जो हिलता है और एक ज़ेब्रा क्रॉसिंग। छोटा रास्ता, उनका वाला, वहाँ से तिरछा कटता है जहाँ धारियाँ नहीं हैं। मेरा कर्ब से उतरता है, धारियों से पार करता है और फिर चढ़ता है: नौ क़दम ज़्यादा और दो «रुको» जो दूसरे में नहीं हैं। मैंने सब पर नंबर लगा दिए थे। पर नक़्शे में महिलाएँ नहीं होतीं।

मैं ऐसे राह दिखाता हूँ:

“तीन क़दम। रुको। कर्ब। चढ़ो। दो क़दम। रुको। एक महिला।”

महिला सामने से, सब्ज़ी की ट्रॉली के साथ आ रही थी।

“नमस्ते।”

उसने जवाब दिया। मैंने हाथ नीचे नहीं किया।

“महिला निकल रही हैं। चार क़दम।”

मैं बग़ल से चल रहा था, केकड़ों और सिपाहियों की तरह, एक हाथ ऊपर उठाए। ऊपर उठा हाथ ही ट्रैफ़िक सिपाही के पास एकमात्र चीज़ है, और बसें उसकी बात मानती हैं। «रुको» मैंने बुधवार को आइरीन से सुना था: वे यह नहीं बतातीं कि किधर; वे «रुको» कहती हैं जब कर्ब होता है। तब मुझे वह कम लगा था। राह दिखाने वाले की जगह से वह बहुत ज़्यादा है: यह अकेला शब्द है जो एक साथ दो लोगों को रोकता है, एक थिएटर को और, ज़रूरत हो, एक महिला को।

“रुको। ढक्कन। हम उसे किनारे से लाँघेंगे, बीच से नहीं। दो क़दम।”

जूलिता आगे थी, अपने हत्थे के साथ, एक शब्द कहे बिना। जूलिता के लिए यह ख़बर है। उसका पैर अपने आप छोटे रास्ते की ओर जा रहा था: वह तिरछा निकलता था, जैसे हाथ किसी जाने-पहचाने घर की घंटी की ओर निकलता है, हवा में एक पल रुकता था और मेरी लकीर पर लौट आता था। वह उसे मेरे वाले पर लौटा देती थी। मैंने उसे चार बार ऐसा करते देखा। चौथी बार उसने होंठ भींच लिए, और नुक्कड़ तक नहीं खोले।

नोआ, पीछे, होंठ हिला रही थी। मैंने सोचा कि वह क़दम गिन रही है, जो वह हमेशा करती है। सड़क पर, टोन्यो घड़ी को देखता, फिर मुझे, फिर घड़ी को, उस

इंसान की तरह जो दो ऐसी चीज़ों की तुलना करता हो जो आपस में सहमत नहीं।

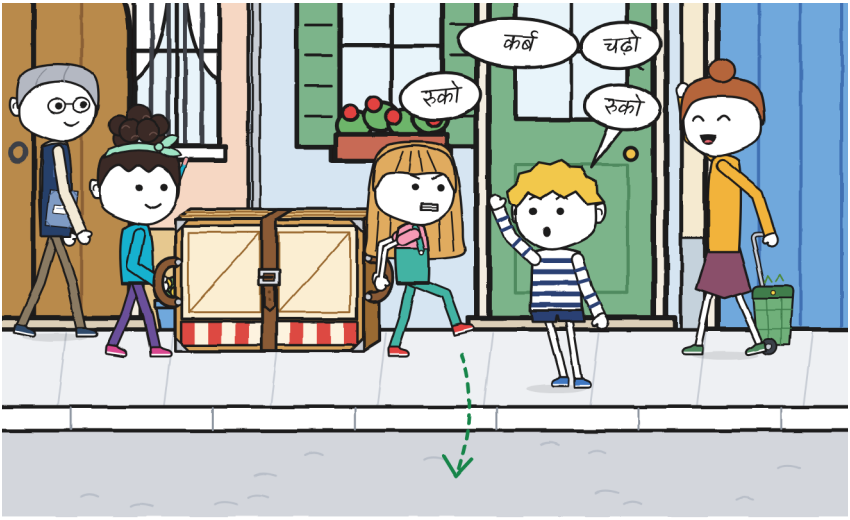

“रुको। नुक्कड़।”

हम पहुँच गए। किसी को पीछे नहीं लौटना पड़ा।

“दूसरा हिस्सा: ग्यारह मिनट,” टोन्यो ने कहा। “यह सबसे धीमा है जो मैंने ज़िंदगी में नापा। दोहराया: कुछ नहीं।”

ग्यारह मिनट बहुत मिनट होते हैं। मुझे फ़र्क़ नहीं पड़ा। मिनट टोन्यो ने लिखे; दूसरी बात मैंने लिखी, छोटी लिखावट में, कि घिस न जाए: यह पहली बार था कि मैंने कुछ चलाया और उसे दोहराना नहीं पड़ा।

“तुमने «रुको» चौदह बार कहा,” जूलिता ने कहा।

“मैंने गिने हैं,” नोआ ने कहा। “पंद्रह।”

तो वह क़दम नहीं गिन रही थी।

“छह फ़ालतू थे,” जूलिता ने कहा। “पर मैंने सारे किए।”

“कोई फ़ालतू नहीं था,” मैंने कहा।

“छह।”

टोन्यो ने यह नहीं लिखा कि कौन सही था। उसने संख्या लिखी: «“रुको”: 15 (नोआ गिनती है)»। जूलिता ने मार्कर खोला और बग़ल में, हरे में, रायो के हेलमेट वाला एक घोंघा बना दिया। टोन्यो उसे कुछ देर देखता रहा। उसने मिटाया नहीं। टोन्यो के पन्ने पर कुछ नहीं मिटाया जाता।

मैंने किसी पर बहस नहीं की। दाँत भींचते-भींचते दुखने लगे थे। –ज.



तीसरा हिस्सा, नुक्कड़ से आँगन तक। जूलिता और मैं उठा रहे थे; राह नोआ दिखा रही थी, उस प्रतियोगिता वाले नक़्शे के साथ जो आइरीन ने सब टीमों को बाँटा था।

बीस क़दम पर वह रुक गई, जहाँ नहर वाली गली शुरू होती है।

“नहीं निकलता।”

“क्या नहीं निकलता?”

“नक़्शा हमें यहाँ से अंदर ले जाता है। पुराने दरवाज़े तक। और हम फाटक से घुसते हैं, जो दूसरी तरफ़ है।”

जूलिता उसे देखने के लिए उसकी ओर घूमने लगी, पूरा छोटा थिएटर मोड़ के पीछे और पट्टे पर कोई नहीं।

“नीचे रखो,” मैंने कहा।

“हम एक सेकंड देखकर आगे चलेंगे।”

“पहले रखा जाता है। फिर बहस।”

जूलिता ने पट्टा देखा, मुझे देखा और अपनी तरफ़ नीचे रख दी। मैंने अपनी रख दी। छोटा थिएटर फुटपाथ पर रह गया, चपटा और आज्ञाकारी, जैसे वह सबसे अच्छा लगता है।

मैंने अपना नक़्शा उसके नक़्शे के बग़ल में रखा, छोटे थिएटर के ऊपर, जो फिर हमारी मेज़ था। गुरुवार से मैं उसे बिना तह किए रखता हूँ, और दिखता है: वह आधी डायरी घेरता है और ऊपर से ज़ुबान की तरह झाँकता है। प्रतियोगिता के नक़्शे में सिर्फ़ एक प्रवेश बना था, लाल तीर के साथ, और वह फाटक नहीं था: वह पुराना दरवाज़ा था। ताले वाला। वही जो मंगलवार को मुझे अकेले मिला था और मैं दो दिन चुप रहा।

“यह पुराना नक़्शा है,” मैंने कहा। “उस समय का जब वहाँ से घुसते थे।”

नोआ ने अपने पर उँगली रखी और मैंने अपने पर। एक ही जगह, दो काग़ज़ों पर।

वहाँ से फाटक तक नोआ के बयालीस क़दम थे। या मेरे चौबीस मीटर। उसके क़दम और मेरे टेप से पूरा मोहल्ला नापा जा सकता है।

“आइरीन को बता दें?” जूलिता ने पूछा।

आइरीन दस क़दम दूर थीं, फ़ाइल के साथ। उन्होंने सब सुना था, मुझे यक़ीन है, और इंतज़ार किया कि हम बताएँ, जैसे कोई वाक्य पूरा होने का इंतज़ार करता है।

“और बाक़ी टीमों को भी,” नोआ ने कहा। “वरना पैदल वाले सब गली में घुस जाएँगे। साइकिलों के साथ।”

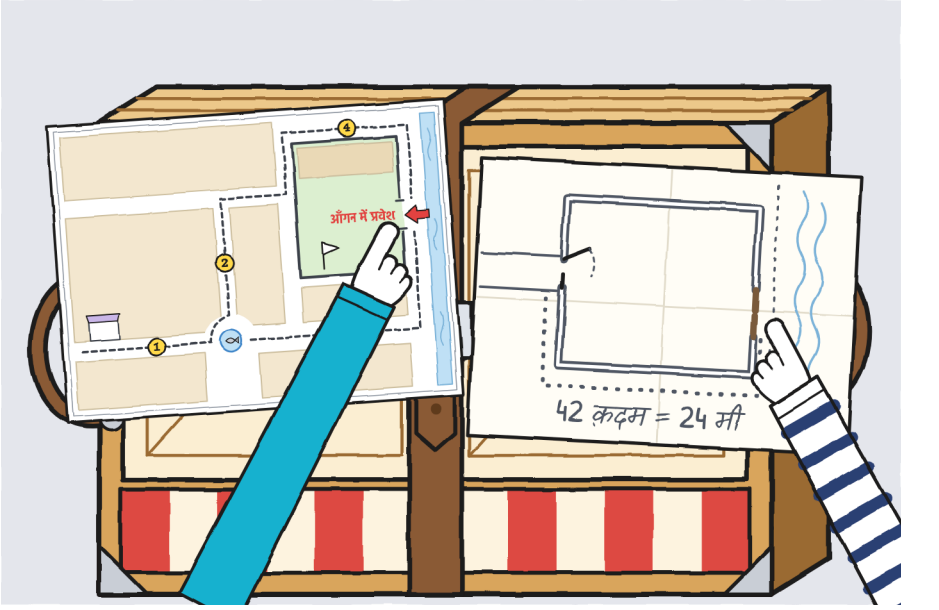

मैंने शनिवार को गली की कल्पना की: पाँच टीमें, हर एक अपने सामान के साथ, और रायो की तीन साइकिलें एक दरवाज़े के सामने घंटी बजाती हुईं।

मैंने कुछ नहीं कहा। मैं सहमत था। सहमति लकीर नहीं छोड़ती।

आइरीन आँगन की एक बेंच पर बैठ गईं, सारे नक़्शे घुटनों पर, और उन्हें लाल मार्कर से एक-एक करके ठीक किया: पुराना तीर काटा और दो बनाए, एक पुराने दरवाज़े पर साइकिल के साथ और दूसरा फाटक पर गठरी के साथ। टोन्यो ने अपना मेरे नक़्शे से मिलाया, लकीर-दर-लकीर।

"रायो उसी से घुसने वाली थी जो नक़्शा कहता था।"

"तुम लोग वहाँ से घुसते हो," आइरीन ने कहा। "साइकिलों के लिए, नक़्शा ठीक था। संयोग से।"

टोन्यो अपने नक़्शे को देखता रहा, उस इंसान के चेहरे के साथ जिसे पता चलता है कि वह सही था बिना उसके लिए कुछ किए, जो रायो में गिना नहीं जाता।



हम नुक्कड़ पर लौटे और तीसरा हिस्सा दोहराया, इस बार फाटक तक। जूलिता और मैं उठा रहे थे, और नोआ ने राह दिखाई, रास्ता खोला और आगाह किया, सब एक साथ:

"रुको! मैं पल्ला पकड़ रही हूँ! निकलो!"

हम निकल गए। मैंने मीटर भरा। «नुक्कड़ → आँगन» की पंक्ति में मैंने लिखा: गुनी और जूलिता, नोआ, नोआ, और चौथे खाने में, «नोआ: "नक़्शा ग़लत है"»। हर नाम अपने रंग में: पेंसिल, हरा और फ़िरोज़ी।

यह पहली पंक्ति थी जिसके सारे खाने भरे थे। आगाह करने वाला खाना हमने गुरुवार को मेरी वजह से बनाया था, और उसे नोआ ने शुरू किया। मैंने उसका नाम अपनी सबसे साफ़ लिखावट में लिखा।

उसने उसे पीठ से रोका, जैसे तुमने मंगलवार को। मैं लिख रही हूँ। —ज.

टोन्यो ने हमें अपना पन्ना दिखाया। ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा था क्या दोहराना पड़ा:

- बुधवार: फ़व्वारे का मोड़, 3 बार।
- शुक्रवार, हिस्सा 1: कुछ नहीं।
- हिस्सा 2: कुछ नहीं (धीमा)।
- हिस्सा 3: प्रवेश। टीम की ग़लती नहीं थी: नक़्शे की थी।

और नीचे, दो बार रेखांकित: «जो सबसे ज़्यादा दोहराया जाता है, वे क़दम नहीं हैं। वे इशारे हैं।»

“यह आख़िरी तो एक राय है,” जूलिता ने कहा।

“यह एक आँकड़ा है,” टोन्यो ने कहा। “रायो में, ग़लत बताया हुआ रास्ता दो बार भरना पड़ता है: जाते हुए और लौटते हुए।”

उसने हेलमेट पहना और अपना अभ्यास करने चला गया। पहले नुक्कड़ पर, टिलिन।



रात को, दुकान में, मारा ने छोटा थिएटर अपने डिब्बे में रखा, और डिब्बा फिर बाक़ियों जैसा एक डिब्बा हो गया। ढक्कन बंद होने से पहले, नोआ ने बकल देखा।

“कल, तीसरे छेद में। भले ही देर से खुले।”

उसने यह बकल को देखकर कहा, मुझे नहीं। यह वही था जो मैंने निकलने से पहले कहा था। मैंने उसे जीते हुए में नहीं लिखा: उसने उसे ख़ुद तय किया था, अपने वक़्त पर, और वह दूसरे स्तंभ में जाता है।

मैंने डायरी लकीरों वाले कोने से खोली: मेरे बिना तय की चार और, नीचे, मेरी वाली। आज मैंने कोई नहीं खींची थी। मैंने दिन पेंसिल हवा में रखकर दोहराया, जैसे हिसाब दोहराया जाता है उसे सही मानने से पहले। मैंने चार असहमतियाँ गिनीं। चारों मैंने ज़ोर से कहीं। एक जीती।

शुक्रवार। असहमतियाँ: 4। कही गईं: 4। जीती गईं: 1।

अपनी शेल्फ़ पर, नं. 6 का डिब्बा अपनी नौ मुहरों के साथ था। नौ। एक भी ज़्यादा नहीं।

जो तुमने जीता वह छोटे थिएटर को बहस से पहले ज़मीन पर रखने वाला था। वह मैं तुम्हें तोहफ़े में देती हूँ। –ज.



अध्याय 5

क्या पहले पहुँचना ज़रूरी है?

शनिवार को मैंने शनिवारों वाली नारंगी टी-शर्ट पहनी। यह अंधविश्वास नहीं है: शनिवारों को चीज़ें होती हैं, और मैं हर बार एक जैसे कपड़ों में रहना पसंद करता हूँ ताकि उनकी तुलना कर सकूँ।

"डायरी से मैच कर रहे हो," जूलिता ने कहा।

मैंने डायरी टी-शर्ट से लगाकर जाँची। वह सही थी, एक शेड के फ़र्क़ के साथ।

ग्यारह बजे, आँगन के दोनों दरवाज़े बहुत सालों में पहली बार खुले थे, और लोग दोनों से आ रहे थे: साइकिलें, पुराने दरवाज़े से, नहर वाली गली से; पैदल वाले, फाटक से, फुटपाथ से। पुराना दरवाज़ा, पूरा खुला, किसी से भी ज़्यादा हैरान लग रहा था। दीवार से दीवार तक झंडियाँ थीं और एक मेज़ जिस पर तख़्ती थी: मंज़िल। फ़्लोरा पहली क़तार में अपने थर्मस के साथ बैठी थीं, उस इंसान की तरह जो जुलूस देखने आया हो और आतिशबाज़ी तक रुकने वाला हो। जूतों की दुकान वाली खड़ी थी, बाँहें बाँधे। वेरा, चूरा को गोद में लिए; चूरा, सिर हर हिलती चीज़ की तरफ़ घुमाती हुई, जो उस सुबह सब कुछ थी। दीवार के ऊपर, एक मैगपाई। उसे किसी ने नहीं बुलाया था।

आइरीन एक बेंच पर चढ़ीं और सीटी बजाई। स्कूल के आँगन जैसी चुप्पी छा गई, जो ऐसी चुप्पी है जिसके नीचे बहुत शोर होता है।

“हर टीम अपना सामान यहाँ तक लाएगी, सारे स्टेशनों से गुज़रकर। सामान के साथ दौड़ा नहीं जाता। जो दौड़ेगा, वह हिस्सा दोहराएगा। और समय वही जीतता है जो दोहराता नहीं।”

मैंने उसे शब्द-दर-शब्द लिख लिया। यह पहली बार था कि किसी खेल का नियम मुझे अपने लिए लिखा हुआ लगा।



सूची में पाँच टीमें थीं, एक कॉर्क बोर्ड पर पिनों से टँगी:

1. रायो (ज़ोई, टोन्यो, ब्रूनो)
2. कोरस
3. शह
4. सुइयाँ
5. नोआ + 2

रायो एक लिफ़ाफ़ा ले जा रही थी, साइकिल पर। कोरस, एक स्टैंड। शतरंज वाले, एक विशाल बिसात। सिलाई वाले, एक बिना सिर का पुतला। हमारा नोआ ने सोमवार को लिखा था, मुझसे मिलने से पहले।

“हम «नोआ + 2» हैं,” मैंने जूलिता से कहा।

“मैं 2 हूँ,” उसने कहा। “तुम प्लस होगे।”

मैंने नाम और संख्या के बीच का छोटा-सा क्रॉस देखा। वह कभी चिह्न नहीं था। मैंने उसे पद की तरह लिख लिया।

हर टीम उस दरवाज़े से निकलती थी जहाँ उसका सामान सोता था। हमें इशारा एंटोनियो अंकल ने दिया, जो पास रहते हैं और दौड़ते नहीं।



दुकान के दरवाज़े पर, मारा ने छोटा थिएटर अपने डिब्बे से निकाला, और छोटा थिएटर अपने सड़क वाले आकार तक बढ़ गया। नोआ ने पट्टा जल्दी कसा और हमने उठा लिया।

क्लैक। एक पैनल बित्ते भर खुल गया, उस मुँह की तरह जिसे कुछ याद आ गया हो।

“नीचे रखो,” मैंने कहा।

किसी ने बहस नहीं की। हमने तीनों ने एक साथ उसे धीरे-धीरे नीचे रखा, जैसे अंदर अंडा हो। दूसरी बार, नोआ ने पट्टा बिना जल्दी के, तीसरे छेद में बाँधा, और परखने के लिए दो बार खींचा। मैंने बकल देखा और फिर सड़क। दोनों ठीक थे।

एंटोनियो अंकल ने अपनी टोपी उतारी और एकदम नीचे की, जो झंडे का काम करती थी।

“आराम से,” उन्होंने कहा, “ऐसे ही पहुँचा जाता है।”

मारा ने जुलूस बंद किया, ख़ाली डिब्बा बग़ल में दबाए। अंदर कुछ न हो तो वह ज़्यादा बड़ा लगता था।



पहला हिस्सा। जूलिता राह दिखा रही थी।

“पाँच क़दम... बाएँ मोड़!”

“पट्टा!”

हम लंगड़ी मछली के चारों ओर धीरे-धीरे घूम रहे थे, पूरा नुक्कड़ घेरे, जब ज़ोई साइकिल पर आई। वह सबसे आगे थी। उसने ब्रेक लगाया और एक पैर ज़मीन पर रखा।

"आप लोग निकलो। इसके साथ दौड़ा नहीं जाता।"

वह तब तक रुकी रही जब तक हम मोड़ से बाहर नहीं निकल गए। फिर चली गई। हमने उसे बीस सेकंड आगे रखा। उसने ख़ुद समय लिया।

वह अचानक रुक गई। चोटी को थोड़ा और वक़्त लगा। —ज.

हर स्टेशन पर एक कार्ड पर मुहर लगती थी। बेकरी वाला एलिया के पास था, जो आटे से भरे अँगूठे से मुहर लगाती थीं और ऐसे दबाती थीं जैसे कार्ड गुँथा आटा हो जिसे आराम करने देना हो। हमारे वाले पर उन्होंने तीन सफ़ेद निशान छोड़े, हर सिर का एक, हालाँकि हम तब पहुँचे जब रायो के कार्ड का आटा सूख चुका था।

रायो हमारे सामने से तीन बार गुज़री, हर बार किसी और सड़क से। छोटे थिएटर के पीछे से, रायो कुक्कू घड़ी जैसी लगती थी: निकलती, बजती और अंदर चली जाती। टोन्यो के दोनों हाथ हैंडल पर थे और वह मोड़ों पर घंटी बजाता था। ब्रूनो के पास लिफ़ाफ़ा था। ज़ोई आगे थी और हर स्टेशन पर उनका इंतज़ार करती थी, कार्ड को तब तक छुए बिना जब तक तीनों न आ जाएँ। दूसरी बार जब वे गुज़रे, टोन्यो ने घड़ी नहीं देखी: उसने हमें देखा। पूरे दिन में यह राय के सबसे क़रीब की चीज़ थी जो मैंने उसमें देखी।



दूसरे हिस्से में जूलिता और नोआ उठा रही थीं और मैं राह दिखा रहा था। कोरस हमसे आगे निकल गया, अपने स्टैंड के साथ। दौड़ते हुए। आइरीन की सीटी बजी,

जो एक साथ हर जगह थीं, और कोरस गाते हुए फ़व्वारे तक लौट गया, धीमे, जैसे तब गाया जाता है जब कोई हिस्सा दोहराना हो।

शतरंज वाले हमसे आगे निकल गए, बिसात खड़ी करके और मोहरे एक थैले में जो ओलों जैसा बज रहा था। यहाँ तक कि पुतला भी हमसे आगे निकल गया, लेटा हुआ, सिलाई वाली तीन महिलाओं के हाथों में जो पंजों पर चल रही थीं, जैसे पुतला सो रहा हो। बिना सिर के पुतले का आपको पीछे छोड़ देना एक ऐसा अनुभव है जिसे मैं नापना नहीं जानता, और मैंने कोशिश की।

जूलिता दौड़ी नहीं। ख़ैर: उसका पैर निकल गया। उसने उसे लौटा लिया।

"क्या पहले पहुँचना ज़रूरी है?" उसने पूछा।

"लेबल में «पहले» नहीं लिखा," नोआ ने कहा। "«तह करके» लिखा है।"

"कर्ब," मैंने कहा।

हमने उसे चढ़ाया।

कोरस ने हिस्सा गाते हुए दोहराया। लौटते हुए सुर बेहतर लग रहे थे। —ज.



तीसरा हिस्सा। नोआ ने फाटक तक राह दिखाई। वहाँ हमने छोटा थिएटर ज़मीन पर रखा।

"कौन खोलेगा?" जूलिता ने पूछा। और जवाब का इंतज़ार किया।

हम तीनों ने एक साथ इशारा किया। यह हफ़्ते में तीसरी बार था। मंगलवार को, हर किसी ने एक जगह की ओर इशारा किया था। शुक्रवार को, हर किसी ने किसी और इंसान की ओर। इस बार, तीनों ने, एक ही जगह: नोआ ने फाटक की ओर इशारा किया, जूलिता ने फाटक की ओर और मैंने फाटक की ओर। फिर हम हँसे, क्योंकि इस तरह यह तय नहीं होता कि कौन। एक दरवाज़े की ओर इशारा

करती तीन बाँहें दरवाज़े के बारे में बहुत पक्की राय हैं और हमारे बारे में कोई नहीं।

"तुम," मैंने और नोआ ने कहा।

नोआ अपने हत्थे पर गई। जूलिता ने पल्ला पीठ से और दोनों हाथों से पकड़ा, पैर अच्छी तरह जमाए, और इस बार एक भी नहीं निकला।

"रुको! मैं पल्ला पकड़ रही हूँ! निकलो!"

हम निकल गए। तह किया हुआ। पूरा।

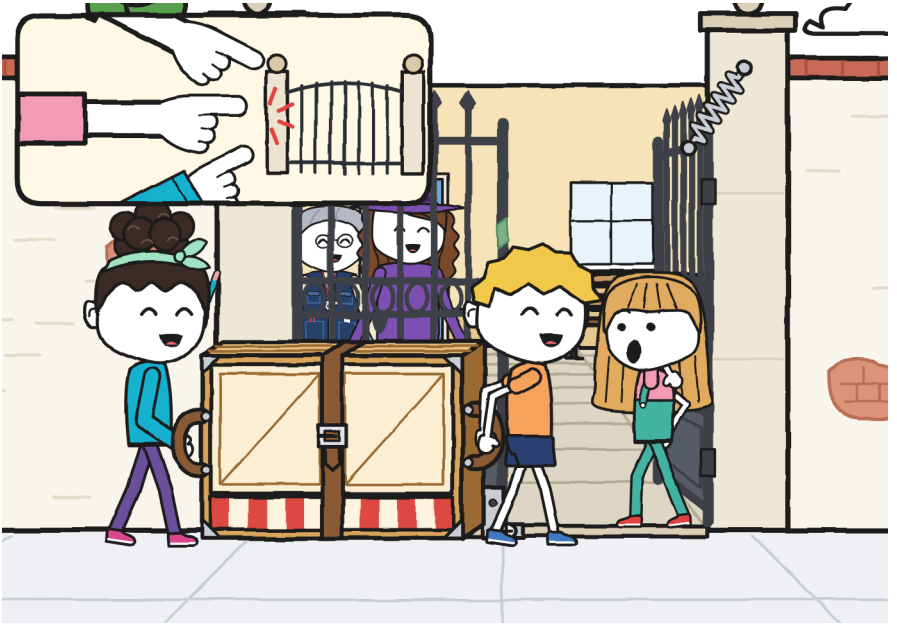

"इकतालीस मिनट," आइरीन ने कहा।

रायो को चौदह लगे थे। तीनों ज़मीन पर साइकिलों के बग़ल में बैठे थे, पसीने के बिना। ज़ोई ने दो उँगलियों से मुझे नमस्ते की; ब्रूनो ने पूरे हाथ से।

मारा डिब्बा बग़ल में दबाए आईं। आइरीन ने अपने आँगन की ज़मीन पर पड़े छोटे थिएटर को देखा, तह किया हुआ, पट्टा अपनी जगह पर, और उसे बहुत देर देखा, ऊपर से नीचे तक, जैसे किसी को देखते हैं जो लंबे सफ़र से लौटा हो, यह जाँचने के लिए कि वह पूरा आया है। उन्होंने फ़ाइल खोली और मारा को रजिस्टर का पन्ना दिखाया: «थिएटर वर्कशॉप। प्रभारी: आइरीन»। मारा ने उसे अपने ढंग से पढ़ा, उँगली से, पहले पंक्ति और फिर मुहर। जूलिता ने उन्हें हरा मार्कर दिया, वह जो मिटता नहीं।

“मेरे काम का है,” आइरीन ने कहा। और लेबल पर दस्तख़त किए।

लेबल पर शब्द आ गया: पहुँच गया। किसी ने उसे लिखा नहीं था। चारों ओर वापस किया गया की नौ मुहरें थीं, मारा के हर सफ़र की एक, और बीच में, अब, एक हरा दस्तख़त जो कहीं जाने वाला नहीं था।



आइरीन ने छोटा थिएटर दर्ज करने के लिए केंद्र की इन्वेंटरी खोली। ज़रूरत नहीं पड़ी: उसका पन्ना पहले से था। ऊपर लिखा था तह होने वाला छोटा थिएटर · पाना बाक़ी, और नीचे, परीक्षण वाले खाने में, एक पुरानी, टेढ़ी पंक्ति थी, बहुत ख़राब लिखावट में:

«आँगन में परखा। तह किया हुआ, दोनों दरवाज़ों से निकलता है। खुला हुआ, नहीं। —R.»

हम तीनों उसे पढ़ने झुके, इतना कि हमारे सिरों ने उस पर परछाईं डाल दी।

“यह मेरे वर्कशॉप संभालने से पहले की है,” आइरीन ने कहा। “मुझे नहीं पता यह कौन है।”

"हमें भी नहीं," ज़ूलिता ने कहा। "पर हम चीज़ें जान रहे हैं।"

R. इस आँगन में आए थे और भेजने से पहले उन्होंने छोटा थिएटर परखा था। इस बार उन्होंने दोनों दरवाज़े नापे: फाटक और पुराना। जो R. जानते थे वह एक पंक्ति में आ जाता था। हमें उसमें एक हफ़्ता लगा था।

एलिया का दरवाज़ा। आँगन के दोनों दरवाज़े। दरवाज़े नापना R. की आदत है। इसे मैं कार्ड के लिए रख लेती हूँ। –ज.



रायो जीती, एक भी हिस्सा दोहराए बिना। इनाम एलिया की रोटी थी जिसके ऊपर आटे से 1 बना था। ज़ोई ने उसे तीन टुकड़ों में बाँटा। ब्रूनो का टुकड़ा उसके अपने जितना ही बड़ा था; मैंने आँख से नापा, और टुकड़ों के मामले में मेरी आँख ग़लत नहीं होती।

जो टीमें पूरे सामान के साथ पहुँचीं, उन्हें आइरीन ने एक रिबन दिया। हमारा मैंने क़रीब से देखा क्योंकि हम तीनों उसे पकड़े हुए थे: एक हाथ पेंसिल वाला, एक हरे मार्कर वाला और एक फ़िरोज़ी आस्तीन वाला। वह सुनहरी साटन का था, चमक के साथ जो पास साँस लेने पर जगह बदलती थी, ऊपर एक छोटी गाँठ और एक किनारा जो पहले से धागा छोड़ रहा था। उस पर दूर से पढ़े जाने वाले अक्षरों में लिखा था: फ़ाइनलिस्ट · मोहल्ले की प्रतियोगिता।

दीवार पर, मैगपाई ने सिर टेढ़ा किया। यही मैं करता हूँ एक ऐसे नक़्शे के सामने जो मुझे समझ नहीं आता।

"फ़ाइनलिस्ट वह है जो सबसे आख़िर में पहुँचता है," ज़ूलिता ने कहा।

"वह है जो अंत तक पहुँचता है," नोआ ने कहा।

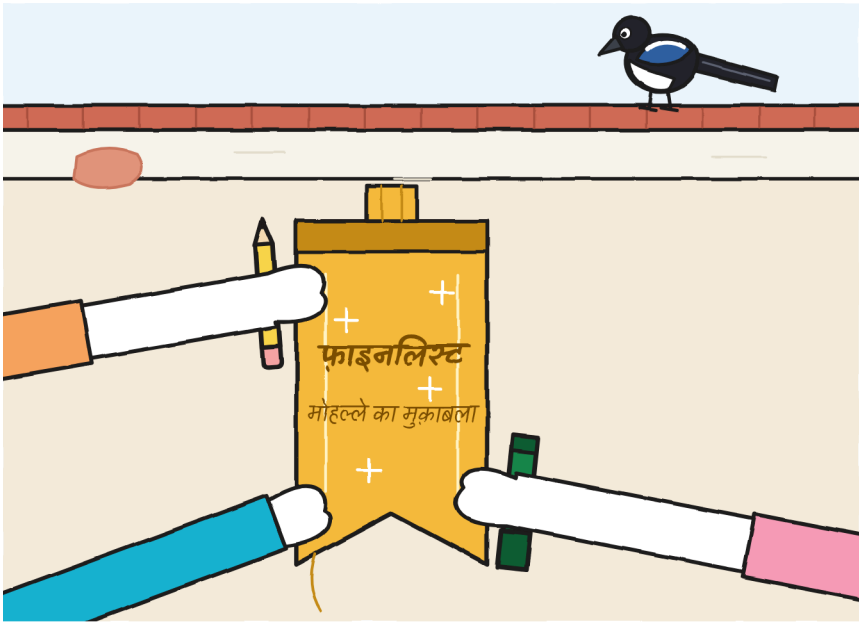

“हम अंत तक सबसे आख़िर में पहुँचे,” मैंने कहा। “दोनों पर लागू होता है।”

“जब यह यहाँ है ही,” आइरीन ने कहा, “तो इसका उद्घाटन करना पड़ेगा।”

उन्होंने उसे मारा के साथ खोला, हाथ बाज़ुओं पर। क्लैक, क्लैक, क्लैक। यह पहली बार था जब पूरे हफ़्ते में मैंने उसे जान-बूझकर खुलते सुना, और आवाज़ वही थी: लगता है छोटे थिएटर को फ़र्क़ नहीं पड़ता।

हम पीछे थे। हमारे पास एक नाटक गढ़ने के लिए दो मिनट थे। नोआ ने भूमिकाएँ बाँटीं। पहले उसने पूछा:

“कौन कम बोलना चाहता है?”

मैंने हाथ उठाया। वह पूरी प्रतियोगिता का सबसे तेज़ हाथ था।

चूरा वेरा से छूटी, एक मीटर उड़ी और एक पैनल पर बैठ गई, बहुत तनी हुई, पूँछ ठीक खिड़की के सामने लटकी हुई। उस हफ़्ते उस चौखटे में टोन्यो भरे मुँह के साथ दिखा था, नोआ सड़क के बीच और एंटोनियो अंकल बिसात के सामने सोते हुए। अब, चूरा की पूँछ। चौखटे की नज़र उस पर बड़ी पक्की है जो वहाँ नहीं होना चाहिए। वही नाटक था, और अभी शुरू भी नहीं हुआ था।

वेरा ने उसे बाँहें फैलाकर उठा लिया, और चूरा ने ख़ुद को उठाने दिया, उस «मैंने नहीं किया» वाले चेहरे के साथ जो उसने मुझसे पहले दिन कॉपी किया था।



नाटक का नाम था «वह पार्सल जो अंदर नहीं आना चाहता था»। जूलिता मारा बनी, काग़ज़ की शंकु वाली टोपी पहनकर। नोआ सारे दरवाज़े बनी, और सब अलग निकले, बस पैर बदलने से। मैं पार्सल बना, खिड़की से झाँकता हुआ।

“वर्कशॉप?” नोआ कहती। “यहाँ, सिलाई।”

“वापस किया गया,” मैं कहता।

“वर्कशॉप? यहाँ, कोरस।”

“वापस किया गया।”

मैंने नौ बार कहा। दर्शक गिन रहे थे, और कोरस, जो इसी के लिए आया था, सुर में गिन रहा था। दसवीं बार, नोआ ने बाँहें फैलाईं, और मैंने दूसरा शब्द कहा।

सलाम के लिए हम तीनों खिड़की से झाँके। हम समा गए। भिंचे हुए। मेरा बायाँ कान जूलिता का था, और दायाँ नोआ के जूड़े का। नीचे, मारा, असली टोपी वाली, दो उँगलियों से ताली बजा रही थीं।



बाँटा नहीं जाता। सटकर बैठना पड़ता है। –ज.



अध्याय 6

प्रतियोगिता ख़त्म होने पर क्या बचता है?

शाम को हम लेबल लेकर दुकान लौटे। नोआ भी आई। वह दरवाज़े पर रुकी रही, कॉपी गले में लटकाए, शेल्फ़ के पार्सल उँगली और होंठों से, बिना आवाज़ के, गिनती हुई।

जूलिता ने तख़्ती देखी। फिर मारा को देखा।

“कर लूँ?”

“तुम्हारी तख़्ती है।”

वह नीले स्टूल पर चढ़ी, 15 काटा और बड़ा-बड़ा लिखा, 14। मारा ने लेबल अपनी किताब में बाक़ी पाँच के साथ चिपकाया और उस पर दो बार हाथ फेरा, जैसे चादर की सिलवटें निकाली जाती हैं।

दरवाज़े पर, नोआ ने गिनती पूरी की।

“चौदह,” उसने कहा, किसी से नहीं।

“चौदह,” जूलिता ने स्टूल से कहा, मार्कर अब भी खुला हुआ।

टोन्यो क्लासिफ़िकेशन लाया, मोहल्ला केंद्र की मुहर के साथ, कि मैं उसे डायरी में उतार लूँ: रायो, चौदह मिनट; शह, उनतीस; सुइयाँ, तैंतीस; कोरस, अड़तीस, एक हिस्सा दोहराकर; नोआ + 2, इकतालीस। मैंने उसे दो बार देखा। «ब्रूनो» पूरा था, बिना कटा और उसके ऊपर कुछ नहीं। हमारी टीम वाला नोआ ने अपनी फ़िरोज़ी पेंसिल से ठीक किया, बिना किसी के कहे: «+ 2» काटा और उसके ऊपर लिखा नोआ, जूलिता और गुनी।

"सोमवार को मुझे नहीं पता था कि तुम सबके नाम क्या हैं," उसने कहा। "ख़ैर। गुनी का नाम क्या है।"

मैंने R. का कार्ड निकाला। उसमें ग्यारह सुराग़ थे। मैंने एक जोड़ा: «12. भेजने से पहले छोटे थिएटर को केंद्र के आँगन में परखा था। वह इन्वेंटरी में है।» टोन्यो ने उसे पढ़ा। उसने अपना वाला भी पढ़ा, उसके नीचे, बाक़ी: मुझे एक स्पष्टीकरण देना है, और उँगली उसके नीचे फेरी, स्याही को छुए बिना। उसने कुछ नहीं काटा।

"उन्होंने छोटे थिएटर को परखा," उसने कहा। "मेरी घंटी को नहीं परखा।"

"यह हमें नहीं पता," जूलिता ने कहा।

"मेरी घंटी की किसी भी इन्वेंटरी में एक भी पंक्ति नहीं है," टोन्यो ने कहा। और वह भी सच था।



फिर मैंने नक़्शा काउंटर पर खोला। ख़ैर: अब वह तह नहीं था। गुरुवार से वह डायरी के अंदर खुला सफ़र कर रहा था, ऊपर से झाँकता हुआ, पर उस पर तहों के निशान थे, सलीब के आकार के, खिड़की जैसे, और वे नहीं जाते। नक़्शे को याद रहता है कि उसे कैसे रखा गया।

मैंने उसे एक कोने पर इंची टेप और दूसरे पर पेंसिलों के डिब्बे से दबाया।

“इसमें तुम्हारा हिस्सा नहीं है,” मैंने नोआ से कहा। “जो फ़व्वारे के उधर है। उन गलियों के बारे में मुझे सिर्फ़ मीटर पता हैं।”

यह वाक्य मैंने रटा नहीं था। मैंने सोचा था, जो अलग बात है: नाटक के दौरान, खिड़की से झाँकते हुए, छठे वापस किया गया और सातवें के बीच।

नोआ ने जूलिता को देखा। जूलिता ने छत को देखा, जो उसका बीच में न पड़ने का तरीक़ा है, और उसे ऐसी दिलचस्पी से देखा जो दुकान की छत ने कभी कमाई नहीं।

“क्या मैं इस पर बना सकती हूँ?”

“इसी के लिए तो दिखा रहा हूँ।”

मैंने नक़्शा दोनों हाथों से उसकी ओर सरकाया। नोआ ने कान के पीछे से पेंसिल निकाली और उसे एक पल हवा में रखा, काग़ज़ को छुए बिना, जैसे हाथ किसी ऐसे दरवाज़े पर दस्तक देने से पहले रुकता है जो आपका नहीं। फिर उतरी।

यह पहली बार था कि कोई और पेंसिल उस काग़ज़ को छू रही थी। हर बार जब फ़िरोज़ी नोक नीचे जाती, मैं इंची टेप को उसके कोने पर थोड़ा और दबा देता, हालाँकि नक़्शे का कहीं जाने का कोई इरादा नहीं था। जूलिता ने देखा और कुछ नहीं कहा, जो जूलिता के लिए ग़ौर करने का बहुत शोर वाला तरीक़ा है।

उसने अपनी गली जोड़ी, केंद्र अंदर से, कमरे, आँगन और उन्हें जोड़ने वाले गलियारे के साथ, और दूरियाँ, क़दमों में। वह छोटा और सीधा लिखती है, जैसे हर अक्षर को एक टाइल में आना हो। मैं मीटर बग़ाल में लिखता गया। «फ़व्वारे से मेरे पोर्च तक: 80 क़दम», उसने लिखा, और मैंने बग़ाल में: «46 मी»। अस्सी गुणा अट्ठावन छियालीस और चालीस होता है। मैंने नीचे की ओर पूरा किया, तहज़ीब से। मेरे नक़्शे में, पहली बार, दो इकाइयाँ थीं, और कोई ग़लत नहीं थी।

आँगन में, नोआ ने एक छोटा फ़िरोज़ी क्रॉस बनाया: «नोआ की जगह: यहाँ क़दम गिनती है»।

जूलिता से और नहीं रुका गया। उसने मार्कर खोला और फ़व्वारे के पास हरे में, बिना पूछे, लिखा: «लंगड़ी मछली: बायाँ पंख नहीं है। यहाँ बाएँ मुड़ते हैं»। दुकान पर हमने दो क्रॉस बनाए, एक पेंसिल का और एक हरा, इतने पास कि एक-दूसरे को छूते थे।

ऊपर, नक़्शे का नाम था गुनी का नक़्शा। नीचे मैंने नया नाम लिखा: मोहल्ले का नक़्शा (तीनों का)। कोष्ठक मेरा विचार था। कोष्ठक मुझे सबसे अच्छे आते हैं।

तीनों का मोहल्ले का नक़्शा

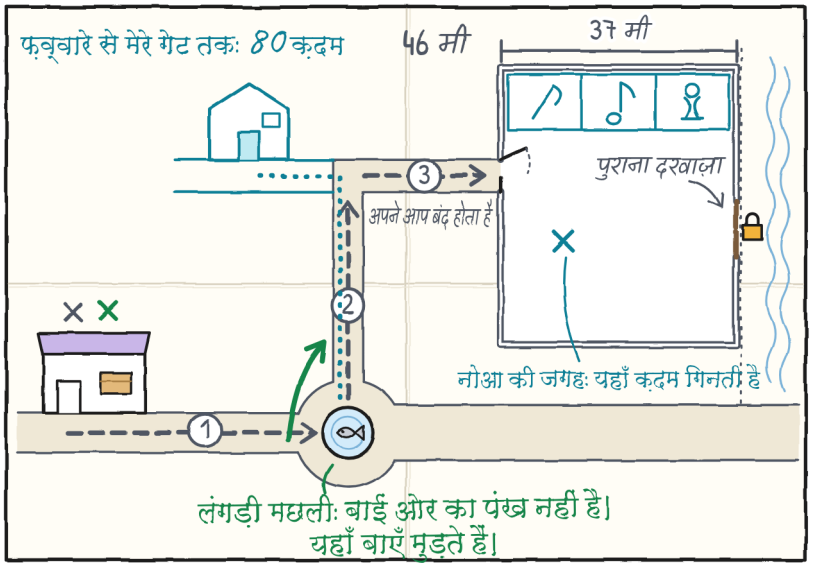

और उनके बनाते हुए उन्होंने मुझे लंगड़ी मछली की कहानी सुनाई। दोनों ने एक साथ सुनाई, काउंटर के हर तरफ़ एक, और मैं एक से दूसरी की ओर सिर घुमाता

रहा जैसे नेट के पास से मैच देखा जाता है। वह लंबी है। उतनी अच्छी नहीं है जितना कहते हैं। पर अब मुझे आती है।

वह बहुत अच्छी है। बस हमने उसे बुरी तरह सुनाया: हम एक-दूसरे पर चढ़ गईं। —ज.



जूलिता ने रिबन दोपहर से कलाई पर बाँध रखा था। तीन धागे पहले ही निकल चुके थे। मैंने गिने क्योंकि वह भी गिन रही थी, धीमे, हर बार जब कोई उसकी डंगरी की जेब में अटक जाता।

"अगर मैं रखूँ, तो सोमवार तक यह झालर बन जाएगा," उसने कहा। "इसे डायरी में रख दें?"

हमने उसे पहले पन्ने पर चिपकाया, साझा के नीचे और उस हरी लिखावट के नीचे जो आधा पन्ना घेरती है, हर सिरे पर टेप के एक टुकड़े से। नोआ ने एक सिरा पकड़ा, जूलिता ने दूसरा, और मैंने दोनों टुकड़े सीधे लगाए। गाँठ ऊपर रह गई, थोड़ी उभरी हुई; चमक हर बार जगह बदलती जब कोई बग़ल का पन्ना पलटता। एक कोने में हमने तीन छोटे आद्याक्षर लिखे: ग, पेंसिल से; ज, हरे में; न, फ़िरोज़ी में।

मैंने डायरी बंद करके देखी। अब वह बुरी बंद होती थी: गाँठ उभार बनाती थी और ढक्कन एक कोने से थोड़ा उठा रहता था, उसकी तरह जो पूरी तरह जाता नहीं। मैंने हाशिये में «ख़ामी» लिखा और फिर मिटा दिया।

मैंने उसे उसके खुले धागों के साथ बनाया। अगर वह उधड़ेगा, तो उधड़ेगा: मैं उसे उससे नया नहीं बनाऊँगा जितना वह है।

शीशे से, दीवार की मैगपाई लैंप-पोस्ट से हमें देख रही थी। वह रिबन को देख रही थी, हमें नहीं। मैंने ग़ौर किया क्योंकि उसकी जगह मैं भी वही देखता।

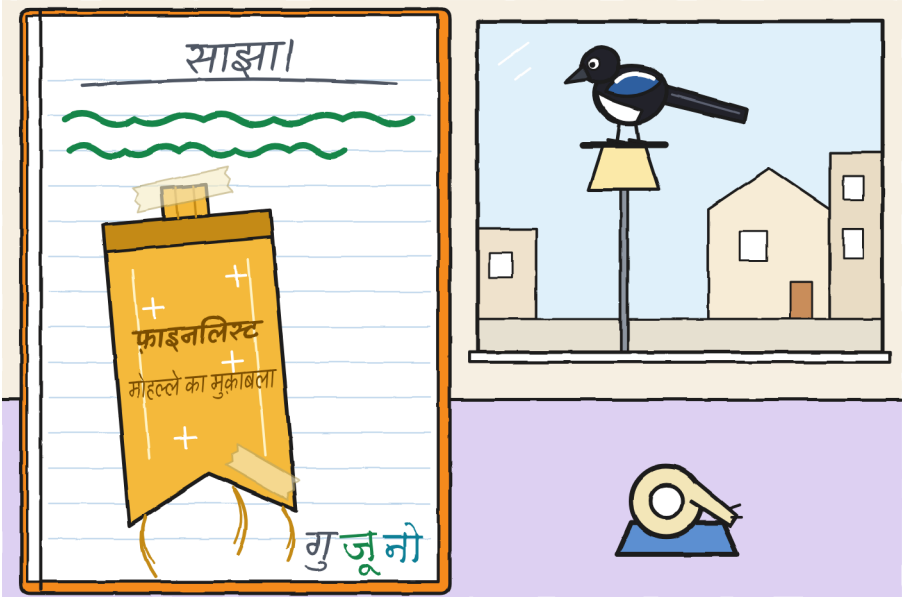

मेरी डायरी तुम्हारी जितनी अच्छी बंद नहीं होती। इसी वजह से। —ज.

नोआ ने पन्ने पीछे की ओर पलटे। पहले उसने इजाज़त माँगी, खुले हाथ को डायरी के ऊपर रखकर, उसे छुए बिना, और मैंने सिर हिलाकर हाँ कही। उसने उन्हें धीरे-धीरे पलटा, एक-एक करके, कोई छोड़े बिना: मंगलवार का मीटर, बुधवार की हरी पंक्ति, आख़िरी पन्ना दीवार के टुकड़े और आधे ताले के साथ, गुरुवार का नया खाना। वह लकीरों वाले कोने तक पहुँची।

"और यह?"

उसका हाथ उसे ढकने की ठीक दूरी पर था। मैंने नहीं हटाया।

"एक हिसाब जो मैं ग़लत रख रहा था।"

“और यह वाला?” उसने ज़ोर से पढ़ा: «फाटक को एक पत्थर भी रोक सकता है»।

“मैंने मंगलवार को सोचा था।”

जूलिता ने स्टूल से पैर हिलाना बंद कर दिया। टोन्यो ने अपने डिब्बे से घड़ी से नज़र उठाई, जो कुछ नाप नहीं रही थी।

“पत्थर «कर्ब» नहीं कहता,” नोआ ने कहा। “न पंद्रह बार «रुको»।”

उसने यह वैसे कहा जैसे वह चीज़ें कहती है, गिनकर। फिर उसने पन्ना आगे पलटा, फिर रिबन तक, जैसे कोई किताब वहीं रखता है जहाँ से उठाई थी।

मैंने लकीरें नहीं मिटाईं। पेंसिल से मिटाई जा सकती हैं, पर मैं नहीं चाहता था। वाक्य के नीचे मैंने एक छोटा पत्थर बनाया, बात-बुलबुले के साथ। मैंने उसे ख़ाली छोड़ा।

इन्हें मत मिटाओ। ये थोड़ी मेरी भी हैं। —ज.



रविवार को, भोर में, नोआ ने निगरानी की, जो केंद्र के सामने रहती है। नौ बजे वह दुकान पर एक नोट लाई। वह क़दम गिनती आई थी; यह उसके होंठों से पता चलता था। वह तीन बराबर हिस्सों में तह था; मैंने जाँचा। उसमें, फ़िरोज़ी में और छोटी, सीधी लिखावट में, लिखा था:

- 7:38: छोटा थिएटर, वर्कशॉप में, तह किया हुआ।
- 7:44: सुबह हो रही है। हिलता नहीं।
- 7:50: वहीं है। उसके चले क़दम: शून्य। —नोआ

वह मुझसे बेहतर निगरानी करती है, मुझसे बेहतर गिनती है और रोटी नहीं बनाती। तीन में से दो। —ज.

मारा ने शटर आधा उठा दिया ताकि हम निकल सकें, और मैंने शेल्फ़ बनाई: चौदह पार्सल और छह ख़ाली जगहें, लगातार, 1 से 6 तक, उन दाँतों की तरह जो क्रम से गिरते हैं। तख़्ती को छूना नहीं पड़ा।

"छह," मारा ने कहा। और अपनी किताब बंद की।

टोन्यो अपने डिब्बे पर था, हेलमेट पहने, हालाँकि रविवार था। नोआ दरवाज़े के पास खड़ी रही। किसी ने उसे बैठने को नहीं कहा, न जाने को। वह इसलिए आई कि उसे आना था, और सोमवार को उसकी रिहर्सल है।



डायरी पूरी करने के लिए मैंने छोटे थिएटर की खिड़की बनाई, ख़ाली।

मैंने उसे फ़ुट्टे से बनाया: चौखटा, छोटा परदा एक तरफ़ समेटा हुआ, लकड़ी अपने रेशों के साथ। अंदर, कुछ नहीं। यह हफ़्ते की पहली खिड़की थी जिससे संयोग से कोई नहीं गुज़र रहा था, और मुझे उसे थोड़ी देर वैसा ही छोड़ना ठीक लगा, जैसे दरवाज़ा खुला छोड़ा जाता है जब सीढ़ियों पर किसी की आहट आती है।

मैंने सबसे पहले ख़ुद को बनाया, पेंसिल से, एक तरफ़, जहाँ मैं तस्वीरों में खड़ा होता हूँ। ख़ुद को बनाना सबसे मुश्किल है: बाहर से नापा नहीं जा सकता। मैं गंभीर निकला और बाल ठीक-ठाक, जैसे मैं रखता नहीं, पर जैसे मैं रखना चाहूँगा। मैंने उसे ठीक नहीं किया। मैंने काफ़ी जगह छोड़ दी।

फिर मैंने डायरी काउंटर पर खुली छोड़ दी, उनकी ओर मुँह किए, पेंसिल आड़ी रखकर। मैंने नहीं बताया किसलिए। मारा, पीछे, नहीं देख रही थीं: वे स्याही की शीशियाँ बराबर करने लगीं उस ध्यान से जिसकी उन्हें ज़रूरत नहीं थी।

नोआ ने मेरी डायरी में बनाने से पहले इजाज़त ली। जूलिता ने नहीं।

जूलिता ने ख़ुद को हरे में बनाया, मुँह खुला और बाक़ी दो से बड़ा, क्योंकि, जैसा उसने कहा, असल ज़िंदगी में भी वह ज़्यादा जगह लेती है। नोआ ने दो उँगलियों से बची हुई जगह नापी, जैसे वह छोटी चीज़ें नापती है, और ख़ुद को उसमें बनाया, फ़िरोज़ी में। उसका जूड़ा ऊपर से चौखटे से बाहर निकल गया। उसने ठीक नहीं किया। नोआ के लिए चौखटे ऊपर से छोटे पड़ते हैं, और वह जानती है।

हम असली खिड़की में समा गए थे, शनिवार को, भिंचे हुए। काग़ज़ की खिड़की में, जो मैंने ज़रूरत से ज़्यादा जगह के साथ बनाई थी, हम उतना ही भिंचे। ज़्यादा जगह किसी ने इस्तेमाल नहीं की।

नीचे, पेंसिल से, मैंने एक शब्द लिखा:

हम समाते हैं।

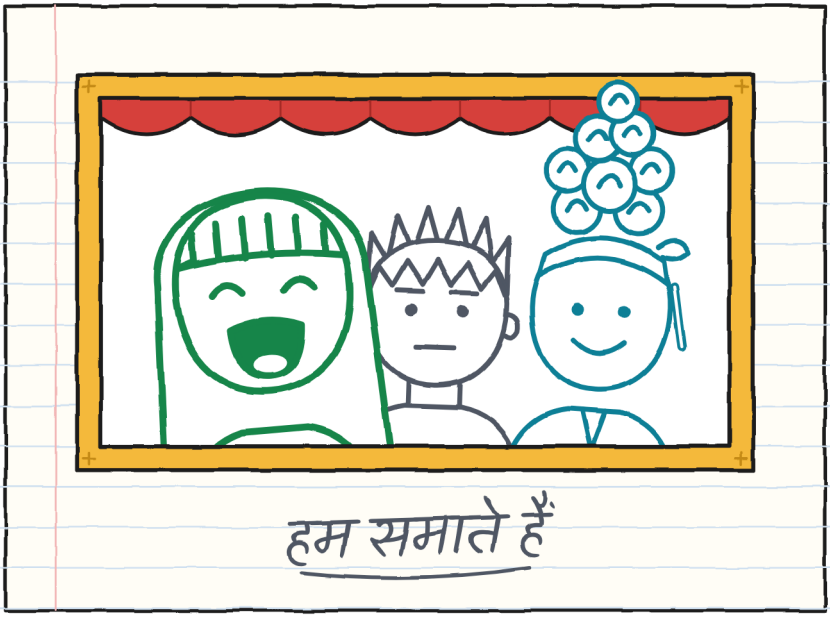

साझा साझा है। यह पहले पन्ने पर लिखा है। —ज.



तालिका बाक़ी थी, जो मेरी हर डायरी को बंद करती है। इस बार मैंने उसे हिस्से-दर-हिस्से बनाया, जैसे पूरा हफ़्ता नापा गया है।

डिलीवरी नं. 6। हिस्सा-दर-हिस्सा (कौन उठाता था · कौन राह दिखाता था · क्या दोहराना पड़ा):

- दुकान → लंगड़ी मछली का फ़व्वारा: गुनी और नोआ · जूलिता · फ़व्वारे का मोड़ (तीन बार)।
- फ़व्वारा → नुक्कड़: जूलिता और नोआ · गुनी · कुछ नहीं (पर धीरे)।
- नुक्कड़ → आँगन: गुनी और जूलिता · नोआ · प्रवेश: नक़्शा पुराना था।
- शनिवार: तीनों · तीनों, बारी-बारी · पट्टा (दूसरी बार, तीसरे छेद में)।
- हमसे पहले: मारा, अकेली · कोई नहीं · नौ सफ़र।
- R.: ? · ? · हमें नहीं पता।

नीचे मैंने तीन का मीटर बनाया, उसके चारों भरे खानों के साथ और तीनों नाम जगह बदले हुए।

तीन खाने। अच्छा, चार। तीन नाम। कोई ख़ाली नहीं। —ज.

नामुमकिन डिलीवरी · ७

(बहुत जल्द)



इस बार लेबल ने ऐसा वक़्त माँगा था जब मैं पहले से पजामे में होता हूँ।

बाक़ी सबके बंद करने पर कौन जागता है? मेरे अलावा। –ज.

मोहल्ला (संस्करण 6)

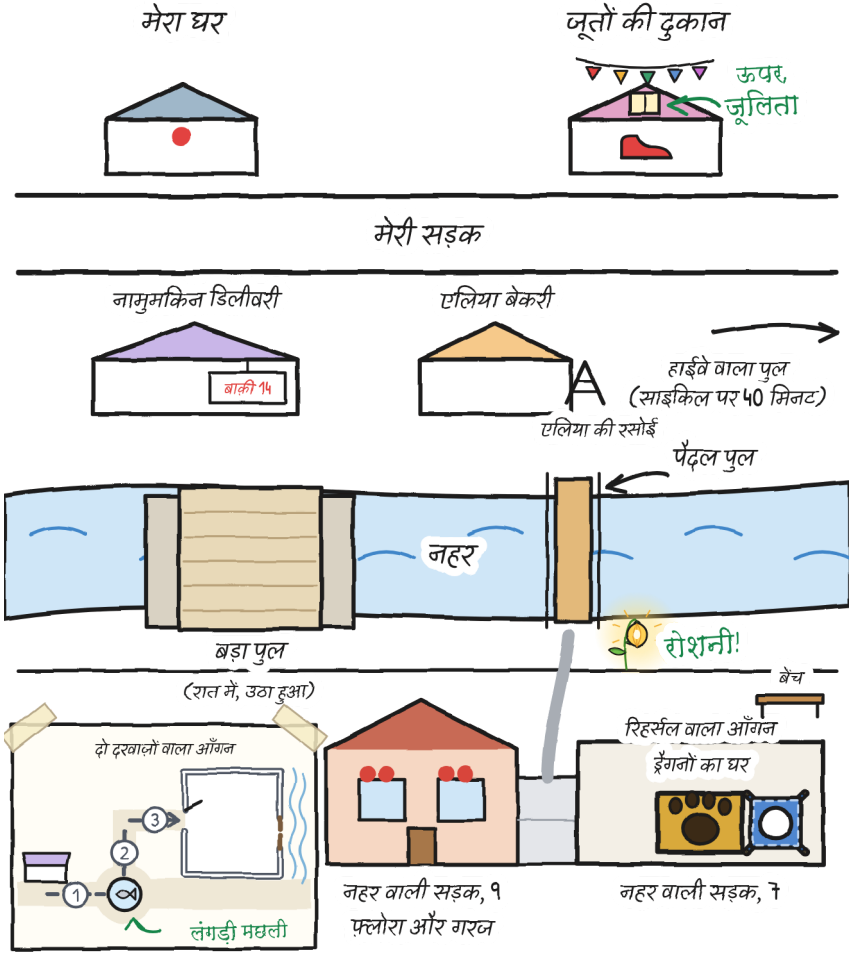
मेरा घर
जूतों की दुकान
ऊपर, जूलिता
मेरी सड़क
नामुमकिन डिलीवरी
बाक़ी 14
एलिया बेकरी
A
एलिया की रसोई
हाईवे वाला पुल
(साइकिल पर 40 मिनट)
पैदल पुल
नहर
रोशनी!
बड़ा पुल
(रात में, उठा हुआ)
बेंच
रिहर्सल वाला आँगन
इंगनों का घर
दो दरवाज़ों वाला आँगन
1
2
3
लंगड़ी मछली
नहर वाली सड़क, १
फ़्लोरा और गरज
नहर वाली सड़क, ٦

तुम्हारा सफ़र

उठाता कौन है? दिशा कौन बताता है? रास्ता कौन खोलता है? आगाह कौन करता है?

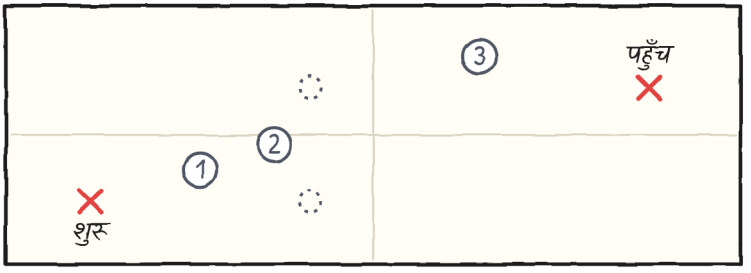

तीन का मीटर

	उठाना	दिशा बताना	रास्ता खोलना	आगाह करना
हिस्सा 1				
हिस्सा 2				
हिस्सा 3				

अगर किसी खाने में हमेशा एक ही नाम आए, तो बदल दो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी

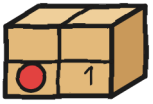

1 · यह पार्सल काटता है

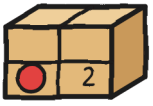

2 · बादल गरजने से पहले न खोलें

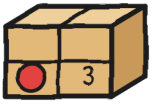

3 · वापस आया, प्लीज़

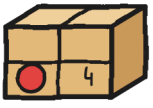

4 · यहाँ नहीं, चूरा!

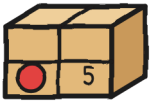

5 · एक केक, हम दो

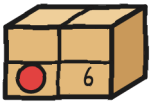

6 · एक जगह, हम तीन

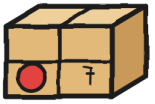

१. (बहुत जल्द)

बाक़ी चौदह। –ज.

एक कहानी, छह साइज़

यह किताब छह साइज़ में, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाओं में मिलती है। XXS, XS, S, M और L कहानी को पन्ना-दर-पन्ना, उन्हीं चित्रों के साथ सुनाती हैं, हर बार थोड़े और ब्योरों के साथ; XL उपन्यास है: वही कहानी, बस उसमें वह सब कहने की जगह है जो गुनी सोचता तो है, पर कहता नहीं।

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। XXS: pre-A1 · XS: A1 · S: A2 · M: B1 · L: B2 · XL: B2–C1।

हर कोई अपने साइज़ में। छोटा थिएटर वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो (L साइज़ की गतिविधियों के साथ)*

असली ढुलाई: क्या करना चाहिए

1. निकलने से पहले, पूरा रास्ता देख लो।
2. एक इंसान ख़ाली हाथ चलता है: दरवाज़े खोलता है और आगाह करता है।
3. हाथ हत्थों पर। हिंज और कुंडियों से दूर।
4. सामान उठाकर न दौड़ते हैं, न मुक़ाबला करते हैं।
5. अगर कोई "रुको" कहे, तो सब रुक जाते हैं।
6. पहले ज़मीन पर रखते हैं; फिर बहस करते हैं।
7. बड़ी चीज़ को दो लोग मिलकर, किसी बड़े के साथ, खोलते और तह करते हैं।

"सिर्फ़ कहानी में" की मुहर उस चीज़ पर लगती है जो कहानी में हो सकती है, पर असली ढुलाई में नहीं।

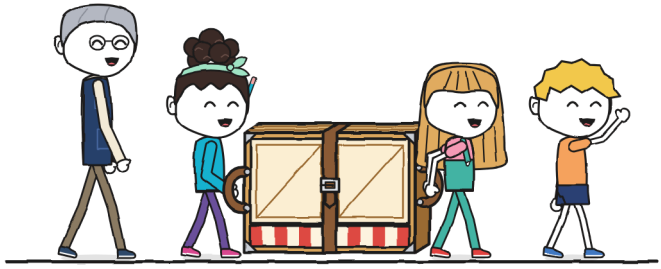

और अगर तुम्हें रास्ते के बारे में कुछ पता है, तो पहले बता दो। –ज.